# मार्गशीर्षमहात्म्य

भाषा

# मार्ग शीर्ष मास माहात्म्य

मूल्य १॥)

❀ ओ३म् ❀

# मार्गशीर्ष मास माहात्म्य

(केवल भाषा)

अनुवादक—

ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा

प्रकाशक—

फोन : २२००३०

प्रथम संस्करण ]

[ मूल्य १.५० नये पैसे

प्रकाशक—
देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६



मुद्रक—कुमार फाइन आर्ट प्रेस, चाह रहट, दिल्ली।
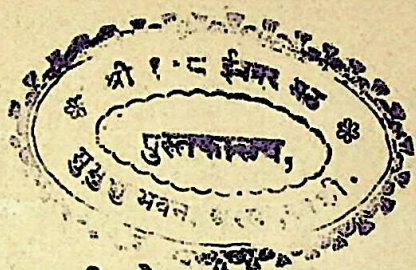
॥ ओ३म् श्रीगणेशाय नमः ॥

# अथ मार्गशीर्ष माहात्म्य (भाषा)

## पहला अध्याय

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः ।

श्री राधाकृष्णाय नमः ॥

एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में सूतजी महाराज शौनक आदि ऋषियों से कहते हैं कि हे ऋषिगण ! इस जगत के सब प्राणियों के आनन्द दाता, भुक्ति और मुक्ति को देने वाले, देवकी के पुत्र भगवान् माधव श्री कृष्ण चंद्र को मैं नमस्कार करता हूं ।

श्वेत द्वीप में सुख से आसीन, देवताओं के देवता, लक्ष्मी के पति, अपने पिता श्री विष्णु

भगवान् को नमस्कार करके श्री ब्रह्मा जी ने पूछा कि हे भगवन् ! हे जगत् को धारण करने वाले ! हे पवित्र कथाओं के कहने वाले ! हे देवेश हे सर्वज्ञ ! सब के मालिक कृपा करके मेरे एक प्रश्न का उत्तर दीजिये । आपने पहले कहा कि मैं मासों में मार्गशीर्ष मास हूँ सो मैं उस मार्गशीर्ष मास का ठीक २ माहात्म्य जानना चाहता हूं। हे रमापते ! उस मास का देवता कौन है ? दान क्या है ? उसमें स्नान आदि करने की विधि क्या है तथा मार्गशीर्ष मास में क्या २ करना चाहिये क्या भोजन करना चाहिये क्या बोलना चाहिये ? तथा जो पूजन, ध्यान, मंत्र-जप आदि कर्म किये जाते हैं उन सबको मुझसे कहिये ।

श्री विष्णु भगवान् ब्रह्माजी से कहने लगे कि हे ब्रह्मन् ! समस्त लोक के उपकारार्थ, आपने बहुत सुन्दर प्रश्न किया है जिसके करनेसे शुभ यज्ञ आदि समस्त कार्य करने का फल प्राप्त हो जाता है। हे सुत ! समस्त यज्ञों के करने से जो पुण्य प्राप्त होता है

तथा जो सब तीर्थों में जो फल मिलता है उन सब फलों की प्राप्ति मार्गशीर्ष मास के व्रत के सेवन से मिल जाता है। हे पुत्र ! मनुष्य तुला पुष्प दान आदि के करने से जो फल प्राप्त करता है वह फल केवल मार्गशीर्ष मास के माहात्म्य के सुनने मात्र से प्राप्त कर लेता है। यज्ञों को करना वेदों को पढ़ना, दान आदि देना, तीर्थों में स्नान आदि करना, संन्यास तथा योग को धारण करने से मैं किसी के वशीभूत नहीं होता किंतु मार्गशीर्ष मास में स्नान, दान, पूजन, ध्यान, मौन, जप, आदि के करने से मैं सहज ही वश में हो जाता हूँ। अन्य मासों में यह सब कर्म करने से मैं वश में नहीं होता, यह मैंने तुमसे अत्यन्त गुप्त बात कही है। सर्वत्र निवास करने वाले देवताओं ने जब मेरी प्राप्ति के लिए यह अत्यन्त सुलभ उपाय देखकर अन्य धर्म आदि सेवन से इस मार्गशीर्ष को गुप्त कर दिया अतः मेरे भक्तों को मेरी प्राप्ति के साधन समझ

कर मार्गशीर्ष मास का सेवन अवश्य करना चाहिये जो मनुष्य इस भारतवर्षमें मार्गशीर्ष मास में व्रत आदि का सेवन नहीं करते हैं वे पाप रूप हैं क्योंकि वे कलि काल से अत्यन्त मोहित हो रहे हैं।

हे वत्स ! आठ मासों में स्नान, दान, व्रत पूजन आदि से जो फल मनुष्य को प्राप्त होता है उतना ही फल मकर के सूर्य होने पर माघ मास में हो जाता है। माघ मास से सौ गुना फल वैशाख मास व्रत सेवन से मिलता है और उस वैशाख मास सेवन से हजार गुणा अधिक फल तुला के सूर्य होने पर कार्तिक मास व्रत सेवन से मिलता है, परन्तु कार्तिक मास व्रत सेवन की अपेक्षा कोटि गुणा अधिक फल वृश्चिक के सूर्य होने पर मार्गशीर्ष मास में प्राप्त होता है। इस कारण मार्गशीर्ष मास समस्त मासों में श्रेष्ठ है और मुझको अत्यन्त प्रिय है। हे पुत्र ! जो मनुष्य मार्गशीर्षमास में प्रातःकाल उठकर ! विधि

पूर्वक स्नान करता है। उससे प्रसन्न होकर मैं उसको आत्माको अपना ही समझता हूँ। हे पुत्र! इसमें मैं तुमसे एक इतिहास का वर्णन करता हूँ, सो तुम सुनो। पहले पृथ्वीतल में नन्दगोप नाम का प्रसिद्ध महात्मा हुआ। गोकुल में उसकी हजारों परम सुन्दर कन्यायें हुईं। मेरे कथनानुसार उन कन्याओं ने मार्गशीर्ष मास में विधि पूर्वक प्रातः स्नान और पूजन किया तथा हविष्यान्न भोजन और नमस्कार किया। इस प्रकार उनके व्रत सेवन से मैं उन पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ, मैंने प्रसन्नता से उन कन्याओं को वर प्रदान में अपनी आत्मा तक को दे दिया। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि यथा विधि मार्गशीर्ष मास का व्रत सेवन करे।

इति श्री स्कन्दपुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा मार्गशीर्ष स्नान फल पहला अध्याय समाप्त हुआ।

## दूसरा अध्याय

यह वार्ता सुनकर श्रीब्रह्माजी भगवान विष्णु से कहने लगे कि हे देवेश ! हे केशव ! आपने विष्णु प्राप्ति का कारण मार्गशीर्ष मास का विधि पूर्वक सेवन करने को कहा, सो हे देवेश ! उसकी विधि क्या है। श्री भगवान् कहने लगे कि आलस्य को छोड़कर मनुष्य रात्रि के अन्त में उठकर विधि पूर्वक आचमनादि करके गुरु को नमस्कार कर मेरा स्मरण करे, पवित्र होकर मौन धारण कर भक्ति से मेरे सहस्र नाम का कीर्तन करे, ग्राम के बाहर जाकर यथा विधि मल और मूत्र का त्याग करे, मृतिका आदि से शुद्ध होकर दन्त धावन पूर्वक स्नान करके तुलसी के जड़ की मिट्टी को तुलसी पत्र सहित मूलमन्त्र अथवा गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करके उस मृतिका को शरीर में लगा-

कर स्नान करे और जलके अन्दर नाक को दबा-अघमर्षण मंत्र को पढ़े, स्नान के लिए तालाब, कुआं या बावड़ी आदि का जल श्रेष्ठ माना गया है। पहले जो मूल मंत्र कहा गया है वह भगवान का अष्टाक्षर मंत्र 'ऊँनमो नारायणाय' है, पवित्र होकर हाथ में कुशा ले आचमन कर अपने हाथ से चार हाथ की चारों तरफ चौकोन स्नानजल में कल्पना करे, और इन मंत्रों से गंगाजी का आह्वान करे कि हे गंगे ! तुम विष्णुके चरणों से उत्पन्न हुई हो। इसलिए विष्णु रूपही हो, अतः तुम मेरी रक्षा करो, जन्म से मरण पर्यन्त तुमको नमस्कार है, वायु ने जो साढ़े तीन कोटि तीर्थ कहे हैं, जो स्वर्ग, पृथ्वी तथा अन्तरिक्ष में हैं वह सब तुम्हारे जल में वास करते हैं, तुम्हारा नन्दिनी और देवताओं के यहां नलिनी नाम भी है, दक्ष पुत्री, विहगा (आकाश गंगा) विश्वगा (संसार गामिनी) ये नाम योगी लोग कहते हैं। हे जाह्नवी ! शांता, शांति प्रदायिनी (शांति देने

वाली) हो, इन पवित्र नामों को स्नान के समय सदा पढ़ना चाहिए, इससे त्रिपथगामिनी गंगा सदैव उस स्थान में वास करती है, हाथ जोड़कर ऊपर कहे मंत्रों का सात वार पाठ करें, शिर में अंजलि लगाकर फिर तीन-चार-पांच अथवा सात वार स्नान करे और नीचे लिखे मंत्र से अभि-मंत्रित करके मिट्टी को शरीर में लगावे, मृतिका का मंत्र हे मृतिके ! तुम पर घोड़े चलते हैं, रथ चलते हैं, तुम भगवान् विष्णु के चरणों से नापी गई हो, तुम रत्नों को धारण करने वाली हो, अतः मैंने जो पाप किए हैं उनका नाश करो, हे मृतिके! सैकड़ों बाहु वाले श्रीकृष्ण ने वाराह रूप धारण करके तुमको ऊपर को उठाया है, हे सुव्रते ! तुम सब प्राणियों की उत्पत्ति का स्थान हो, तुमको नमस्कार है ।

इस प्रकार स्नान कर विधि पूर्वक आचमन करे और जल के किनारे पर खड़े होकर शुक्ल वस्त्र धारण करे, आचमन कर देवता, ऋषि और

पितरों का तर्पण करके दूसरी धोती को धारण करके तर्पण की धोती को निचोड़े, तथा शुद्ध मृतिका को लेकर अभिमंत्रित करके आलस्य को त्याग कर वैष्णव लोग ललाट में यथा संख्य ऊर्ध्व पुण्ड तिलक लगावे, ब्राह्मण बारह पुण्ड तिलक लगावे और क्षत्रिय चार पुण्ड, वैश्य दो पुण्ड, स्त्री तथा शूद्रों को एक-एक पुण्ड धारण करना चाहिए। ब्राह्मण मस्तक, उदर, वक्षस्थल, कंठ, दोनों कांख, दोनों भुजा, दोनों कान, पीठ त्रिक अर्थात् रीढ़ में १२ पुण्ड लगाने चाहिएँ। क्षत्रिय को ललाट हृदय और दोनों भुजाओं में धारण करना चाहिए। वैश्यों को ललाट अथवा हृदय में तथा स्त्री और शूद्रों को केवल ललाट में ही धारण करना चाहिए तथा ललाट में केशव का और उदर में नारायण का ध्यान करे। ब्राह्मण वक्षस्थल में माधव का कंठ में गोविन्द का, दक्षिण कोख में विष्णु का बाहु में मधुसूदन का, कानों के मूल में त्रिविक्रम का वाम पार्श्व में वामन का

वाम बाहु में श्रीधर का कान में हृषीकेश का पीठ में पद्मनाभ का त्रिक (रीढ़) में दामोदर का न्यास करे, और हाथ धोकर तिलक जल को भगवान वासुदेव का ध्यान कर शिर पर धारण करे। क्षत्रिय ललाट में केशव का, हृदय में माधव का दोनों भुजाओं में मधुसूदन का, स्मरण करे अब वैश्य का कृत्य सुनिए ललाट में केशव का हृदय में माधव का ध्यान करे। स्त्री और शूद्र ललाट में केशव का ध्यान करें। भगवान् कहते हैं कि हे ब्रह्मन् ! इस प्रकार मेरी प्रसन्नताके लिए पुण्ड्रों को धारण करे श्यामवर्ण का तिलक शांति देने वाला है रक्तवर्ण का तिलक वैश्य को करने वाला है पीतवर्ण का तिलक लक्ष्मी को देने वाला है। और श्वेत वर्ण का मोक्ष देने वाला है इन तिलकों को एकान्तवासी होकर महाभाग वाले लोग समस्त लोक के हित में रत रहने वाले धारण करते हैं, बीच में छिद्र छोड़ कर विष्णु चरण की आकृति के समान पुण्ड्र को धारण करे। मध्य में छिद्र से

युक्त तिलक को हरि मन्दिर कहते हैं। ऊपर को उठा हो सुन्दर हो, सीधा हो, पतला हो, पार्श्व भाग सुन्दर हो और मन को मुग्ध करने वाला हो यह उत्तम तिलक कहा गया है और जो बिना छिद्र का तिलक धारण करते हैं वे द्विजों में अधम हैं, और जो द्विजों में अधम बिना छिद्र का ऊर्ध्व पुंड धारण करते हैं वह तिलक में लक्ष्मी के साथ स्थित मुझको अलग करते हैं अतः छिद्र-युक्त पुंड को धारण करे यदि बडा छिद्र हो तो उत्तम कहा गया है। ब्राह्मण भगवान् के सालोक्य पद प्राप्ति के लिये सदा इस तिलक को धारण करे।

इति श्रीस्कन्द महापुराणे मार्गशीर्ष मास माहातत्म्य ज्योतिषाचार्य प० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा त्रिपुण्ड धारण विधि दूसरा अध्याय समाप्त हुआ ॥२

## तीसरा अध्याय

ब्रह्माजी कहने लगे कि हे भगवन्! पुंड्र कितने प्रकार के होते हैं सो मेरी सुनने की इच्छा है भगवान् कहने लगे कि हे पुत्र! पुंड् तीन प्रकार के होते हैं। तुलसी की मृतिका से अथवा गोपी चंदन से पुंड्र को धारण करे, विद्वान् लोग हरि चंदन से पुंड्र को धारण करते है अथवा श्याम तुलसी की मृतिका से ऊर्ध्व पुंड्र धारण करे तो मैं अत्यंत प्रसन्न होता हूं! हे वत्स गोपी चंदनका माहात्म्य सुनो जो द्वारिका की मिट्टी को हाथमें लेकर ऊर्ध्व पुंड्र धारण करता है उसके पुण्य कर्म का कोटि गुणा फल होता और जो गोपी चंदन को मस्तक पर क्रियाहीन श्रद्धा हीन भी धारण करता है उसका फल सदैव नाशहीन होता है जो द्विज ( ब्राह्मण

क्षत्रिय और वैश्य ) गोपी चंदन के पुंड्र को सदैव हर समय धारण करता है उसको सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में माघ मास में प्रयाग में स्नान दानादि के पुण्य का फल प्राप्त होता है उससे भी अधिक मेरे घर ( बैकुंठ ) में जाकर देवता के समान हो जाता है। जिसके घर में गोपी चंदन रहता है और भक्ति से जो गोपी चंदन के पुंड्र को अपने ललाट पर धारण करता है उसके घर में हे ब्रह्मन् । कंस को मैं वध करने वाला कृष्ण लक्ष्मी के सहित वास करता हूं जो इस कलियुग में पापों को नाश करने वाली द्वारिका की मिट्टी को मेरा मन्त्र पढ़कर ललाट में धारण करता है, वह चाहे कितना ही पापी क्यों न हो यमराज का दर्शन नहीं करता। जिसके मरण समय में गोपी चन्दन का पुण्ड्र ललाट हृदय और मस्तक में लगा रहता है वह मेरे लोक को पाता है, चाहे गौ को मारने वाला बालघाती या ब्रह्महत्यारा भी क्यों न हो। जिसके ललाट में गोपी चन्दन का

पुण्ड्र लगा होता है। मेरे प्रभाव से उस प्राणी को ग्रह, राक्षसगण, यक्ष, पिशाच उरग और भृत्यनायक कभी बाधा नहीं देते। जिसके ललाट में सुन्दर ऊर्ध्व पुण्ड्र देखने में आता है तो यदि वह चाण्डाल है तो भी वह शुद्धात्मा पूजनीय है इसमें कोई संशय नहीं है। जो बिना स्नान किए अपवित्र पातकी क्रियाओं को करता है वह गोपीचन्दन के सम्पर्क से उसी क्षण पवित्र हो जाता है जो अपवित्र है आचार से भ्रष्ट है और नित्य ही पाप कर्मों में लगा रहता है परन्तु नित्य ऊर्ध्व पुण्ड्र को धारण करने से पवित्र हो जाता है सो हे ब्रह्मन्! मेरे भक्त को चाहिए कि मेरे प्रिय होने के लिए अथवा अपने कल्याण और रक्षा के लिए मेरे पूजन और हवन के समय प्रातःकाल और सायंकाल नित्य ही सावधान होकर इस संसार से मुक्त कर देने वाले ऊर्ध्व पुंड् को धारण करे ऊर्ध्व पुंड्र को धारण करने वाला चाहे चांडाल ही क्यों न हो और वह चाहे कहीं भी मर

जाय विमान में बैठकर मेरे लोक को पाकर पूजित हो जाता है। ऊर्ध्व पुंड्र को धारण करने वाला जिसके अन्न को भी खाता है उसी समय उसके बीस कुलों का नरक से उद्धार कर देता है। जो शीशे में अथवा जल में देखकर विधिपूर्वक उर्ध्व पुंड्र धारण करता हैं वह परम गति को प्राप्त कर लेता है। अनामिका उंगली से तिलक धारण करने से शांति मिलती है। मध्यमा उंगली आयु को बढ़ाने वाली अंगुष्ठ पुष्टि देने वाला तथा तर्जनी मोक्ष को देने वाली है। जो गोपी चन्दन का टुकड़ा किसी वैष्णव को देता है वह अपने एक आठ कुलों को तार देता है। जो विना उर्ध्व पुंड्र तिलकों के यज्ञ दान तप हवन वेद पाठ पितृ तर्पण आदि करता है उसका सब कृत्य व्यर्थ हो जाता है। जिन मनुष्यों का ललाट बिना उर्ध्व पुंड्र का होता है उनका मुख मैं कभी नहीं देखना चाहता क्योंकि वह मुख श्मशान के तुल्य होता है। विष्णु भगवान् की कृपा के लिए उर्ध्व पुंड्र जो भगवान् को अत्यन्त प्रिय है धारण

करता है तथा मत्स्य कूर्म आदि को धारण करता है तथा इस कलियुग में द्वारिकापुरी की मिट्टी से मत्स्य, कूर्म आदि चिन्हों को धारण करता है उसके शरीरको तुम मेरा ही शरीर समझो । इसलिए अपनी भलाई चाहने वाला पुरुष मेरे शरीर और उसके शरीर में कुछ भी अन्तर न समझे जिसके शरीर में मेरे अवतारों के चिन्ह देखने में आवें उनको मेरा शरीर ही जानना चाहिए। उसका पाप कर्म भी पुण्य में परिवर्तन हो जाता है । जोमनुष्य अपने शरीर में शंख चक्र गदा पद्म मत्स्य और कूर्म की रचना करता है उसके पुण्य की सदैव वृद्धि और १०० जन्मों के पाप नाश को प्राप्त होते हैं । इस कलियुग के समय जिसके शरीर में मेरे आयुधों के चिन्ह देखने में आवें वे मेरे ही रूप हैं । जिसका शरीर नित्य नारायण के आयुधों से चिन्हित होता है उसके चाहे करोड़ों पाप क्यों न हों यमराज उसका क्या कर सकता है ! शंखो-द्धार तीर्थ में कोटि जन्म वास करने वाले को जो

फल मिलता है वह फल अपने दक्षिण हाथ में शंख के चिन्ह को धारण करने वाले को प्रतिदिन मिलता है। पुष्कर तीर्थ में विष्णु के दर्शन से जो फल कहा गया है उससे कोटि गुणा अधिक फल शंख के ऊपर कमल के चिन्ह धारण करने को मिलता है कलियुग में जिसकी वाम भुजा पर गदा का चिन्ह लगा रहता है गदाधर भगवान उसको गया श्राद्ध का फल प्रतिदिन देते हैं काशी में चक्र स्वामी के समीप लिंग दर्शन से जो फल मिलता है वही फल अपने शरीर में गदा और चक्र के लिखने से मिलता है जिसका शरीर गोपीचन्दनसे रचित मेरे आयुधों से चिह्नित है उसको प्रयाग आदि तीर्थों में जाने की क्या आवश्यकता है क्योंकि वहाँ जाने से जो फल मिलता है वह उसको वहाँपर ही मिल जाता है। हे ब्रह्मन् ! मैं जब जब शंख चक्र आदि से चिन्हित शरीर को देखता हूँ तब तब ही मुझको अत्यन्त प्रसन्नता होती है, और उसके पापों को

अवश्य भस्म कर डालता हूं। जिसके शरीर में प्रतिदिन तथा अहोरात्र शंख चक्र गदा और पद्म का चिन्ह लिखा रहता है वह मेरी ही आत्मा और मेराही स्वरूप है। जो कलियुग में नारायण के आयुधों के चिन्ह को धारण करके पुण्य के कर्मों को करता है उसको उस कर्म का मेरु के तुल्य फल मिलता है ! इसमें कुछ संशय नहीं। हे पुत्र जो शंख आयुध से चिन्हित होकर विधि हीन भी श्राद्ध करता है तो उसको श्राद्ध का अक्षय पूर्ण फल मिलता है, जिस प्रकार अग्नि देवता वायुः से प्रेरित होकर काष्ठ को अंत्यत जला देता है वैसे ही मेरे आयुधों को देख कर पाप समुहजल जाते हैं ओं नमोनारायणाय' इस आठ अक्षरों वाले मंत्र से युक्त मुद्रा को सुवर्ण या चांदी के बने मेरे शंख आदि आयुद्धों को धारण करता है विशेष रूप से कलियुग में धारण करता है वह मुझको प्रहलाद के समान प्रिय है नारायण की मुद्रा, शंख, चक्र, आदि के चिन्ह तथा आंवला के फलों की माला

और तुलसी की लकड़ी की माला तथा द्वादशाक्षर मंत्र (ओं नमो भगवते वासुदेवाय) को और मेरे आयुधों को धारण करता है, वह वैष्णव मेरे समान ही हो जाता है, जिसके घर में शंख, चक्र के चिन्ह से चिन्हित शरीर धारी ब्राह्मण भोजन करता है हे पुत्र ! उसके अन्न के पित्रों के सहित मैं स्वयं भोजन करता हूँ, जो श्रीकृष्ण के आयुधों से चिन्हित शरीरधारी को देख कर उसका सम्मान नहीं करता वह बारह वर्ष के उपार्जित शुभ कर्मों के फल को नष्ट कर देता है, यदि श्रीकृष्ण के आयुधों से चिन्हित शरीरधारी श्मशान में मर जाता है, उसकीगति प्रयाग में मरने के समान होती है । कलियुग में जिसका शरीर मरे आयुधों से पीडित रहता है उसके शरीर में इंद्रादिक समस्त देवता वास करते हैं, जो मेरे शस्त्रों से अंकित होकर मेरी पूजा करता है उसके हजारों अपराधों को मैं नित्य नष्ट करता हूं, जो काष्ठ से मेरे शस्त्रों का बिम्ब (निशान) बनाकर उस निशान से अपने शरीर

को चिन्हित करता है, उसके समान दूसरा और वैष्णव नहीं है नमो 'नारायणाय' इस अष्टाक्षर मंत्र की धातु की बनीहुई मुद्रा शंख पद्म आदि की मुद्रा को अपने हाथ में धारण करता है वह सुर तथा असुर सभी से पूजित होता है। प्रथम इस नारायणी मुद्रा को अपने हाथ में प्रह्लाद, विभीषण बलि, ध्रुव, शुक, मान्धाता अम्बरीष, मार्कण्डेय आदि ब्राह्मणों ने धारण किया था, और शंख आदि से चिन्हित शस्त्रों से शरीर से चिन्हित करके मेरी अराधना कर मुझे प्राप्त हुए अभिलषित फल को प्राप्त हुए, गोपी चन्दन की मिट्टी से जिसका शरीर चिन्हित है तथा शंख, चक्र, पद्म आदि से चिन्हित है मै उसके शरीर में सदैव वास करता हूँ, बुद्धिमान विद्वान् सोने, चांदी, तांबा, काँसी या लोहे का चक्र बना कर धारण कर और वह चक्र बारह आरा छः कोश और तीन वलि से विभूषित हो, विद्वान ऐसे सुदर्शन चक्र को बनावे और उपवीत के समान सदैव शंख, चक्र और गदा को धारण करे, विशेष

करके ब्राह्मण और वैष्णव लोग इस चक्र के चिन्ह को शिखा और यज्ञोपवीत के समान धारण करें, चक्र के चिह्न से जिस ब्राह्मण का शरीर रहित है उसका समस्त कर्म निष्फल है और जिसका शरीर मेरे चक्र से चिन्हित है वह सदा ही पवित्र है, यह वेद का वचन है, विद्वान् पुरुष को चाहिए कि जो हव्य (देवताओं के निमित दिया हुआ), और कव्य (पितरों के निमित दिया हुआ) दान ऐसे ब्राह्मण को देवे जो चक्रांकित हो, चक्र चिन्ह रुप कवच को देवता तथा दानव भी नहीं तोड़ सकते तथा वह मनुष्य समस्त प्राणियों तथा राक्षसों से भी अजेय हो जाता है, जिसके शरीर में मेरा चक्र चिन्ह रुपी कवच होता है, उसके गृह में पुत्र आदि का अशुभ नहीं होता। ब्राह्मण अपनी दक्षिण भुजा में सुदर्शन चक्र को और वाम भुजा में शंख को धारण करे, इस बात को वेदवेत्ता लोग ही जानते हैं, इस कारण मंत्रों से मंत्रित कर आयुधों को धारण करना चाहिए ललाट में गदा को, मस्तक में धनुष और

बाण को, हृदय में नन्दक नाम षड्ग को और दोनों भुजाओं में शंख और चक्र को धारण करें। इस प्रकार प्रयत्न पूर्वक चक्र आदि को सदा धारण करके उस समय ऐसा कहे, पुत्र, मित्र और स्त्री आदि जो कुछ भी मेरा परिग्रह है उन सबको शरीर के साथ विष्णु प्रीत्यर्थ अर्पण किया। मेरी अव्यभिचारिणी भक्ति से प्राप्त मनोरथ जीवन पर्यन्त अपने धर्म में स्थित रहे, शंख चक्र आदि चिन्हों से चिन्हित शरीर को देख कर जो उनकी निन्दा करते हैं, वे मनुष्यों में अधम हैं, उनका मुख देख कर सूर्य नारायण को देखे, और श्रीकृष्णचंद्र का नाम मुख से उच्चारण करे तो शुद्ध होता है अन्यथा शुद्धि नहीं होती,

इति श्री स्कन्दपुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा गोपीचन्दनादि धारण विधि मार्गशीर्ष स्नान फल तीसरा अध्याय समाप्त हुआ

## चौथा अध्याय

ब्रह्माजी कहने लगे कि हे केशव जिसने शरीरका तप्त चक्र से चिन्हित किया और गुरु से मंत्र की दीक्षा ली है तथा कमल और तुलसी की माला को धारण किया है, उसको क्या फल मिलता है, सो आप कृपा करके कहिये। भगवान् कहने लगे जो द्विज तुलसी काष्ठ की माला को धारण करता है वह चाहे अपवित्र, आचार भ्रष्ट हो, पर मुझे प्राप्त होता है इसमें कोई संशय नहीं है आंवला तथा तुलसी काष्ठ की माला जिसके कंठ में दिखाई देती है वह निश्चय ही भगवद् भक्त है। जो तुलसी दल की माला विशेष कर मेरे गले से उतरी हुइ धारण करता है वह देवताओं से भी नमस्कार के योग्य हो जाता है। तुलसी दल की माला तथा आंवले के फल की माला पापी पुरुषों को भी मुक्ति की दाता है, फिर मेरे सेवकों का तो कहना ही क्या

है उनको तो अवश्य मुक्ति मिलती ही है। जो मेरी उतरी हुई तुलसी काष्ठ की माला धारण करता है उसको उस माला के प्रत्येक पत्र में दश-दश अश्व मेघ यज्ञ का फल मिलता है' हे वत्स! जो तुलसी काष्ठ की माला धारण करता है मैं उस को प्रतिदिन द्वारका वास का फल देता हूँ जो भक्ति से तुलसी काष्ठ की माला मुझ को अर्पण करके धारण करता है वह मनुष्य निष्पाप हो जाता है जो तुलसी की माला धारण करता है मैं उस पर सदैव प्रसन्न रहता हूँ। वह मुझको अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है, न उसका कोई अशौच है और न ही प्रायश्चित जिस मनुष्य के बाहु, शिर, हाथ और शरीर में तुलसी काष्ठ का आभूषण है वही मेरा प्रिय है, जो तुलसी काष्ठ की माला पहन कर पितरों के निमित अथवा देवताओं के निमित दान आदि करता है उसको कोटि गुणा फल मिलता है, तुलसी काष्ठ की माला को देख कर यमराज के दूत ऐसे दूर से ही भाग जाते हैं जैसे वायु के वेग

से पत्र कहीं का कहीं चला जाता है, जिसके घर में तुलसी काष्ठ अथवा तुलसी पत्र सूखा या गीला किसी प्रकार का होता है उसमें इस कलियुग के समय में भी किसी प्रकार के पाप का संभव नहीं होता, जो तुलसी काष्ठ की माला पहनकर इस पृथ्वी पर भ्रमण करता है उसको दुःस्वप्न, दुष्ट निमित और शत्रु से भी भय नहीं होता' जो पापी माला को धारण नहीं करते उनका कभी नरक से उद्धार नही होता क्योंकि वह मेरे कोप रूपी अग्नि से जल जाते है, इस कारण यत्न के साथ तुलसी काष्ठ की कमल को या आंवले की माला धारण करनी चाहिए पूर्वोक्त उर्ध्व पुंड्र आदि चिन्हों को धारण कर तुलसी वृक्षके पास बैठकर हाथमें कुशा लेकर मेरा स्मरण करता हुआ संध्योपासन आदि कर्म करना चाहिए मेरा भक्त संध्योपासन करके मेरा पूजन करे यदि गुरु उस जगह पर हो तो पहले गुरु के पास जाकर उनको नमस्कार करे कुछ भेंट आदि गुरु के अर्पण करके चित्त से दंडवत् नमस्कार

करे कृष्ण मृग चरम पर कुशा का आसन पूजा मंडप में बिछा कर पद्मासन से अच्छी तरह बैठ जितेन्द्रिय होकर मंत्र पढ़ कर तीन प्राणायाम करके पूर्व की तरफ मुख करके श्रेष्ठ हृदय कमल को विज्ञान रुप सूर्य से हृदय में विकसित करे हृदय-कमल की कर्णिका में सूर्य चन्द्र और अग्नि का न्यास करे। सूर्य चन्द्र और अग्नि से युक्त उस हृदय कमल में सूर्य चन्द्र और अग्नि का वैष्णव स्मरण करे। उसके ऊपर नाना रत्नोंसे युक्त पीठ को स्थापित करे उस सिंहासन पर कोमल चिक्कण और उदय काल के सूर्य के समान तेज वाले अष्ट दल कमल को अष्टाक्षर मंत्र के प्रत्येक अक्षरों से युक्त कर स्थापित करे। उस कमल पत्र पर स्थित कोटि चन्द्र के समान कान्तिमान चतुर्भुज महापद्म शंख चक्र और गदा धारी कमल पत्र के समान विशाल नेत्र समस्त लक्षणों से युक्त श्रीवत्स कस्तुभ मणि से शोभित वक्षःस्थल और विचित्र आभूषणों से युक्त दिव्य भूषणों से भूषित दिव्य चंदन से

लिप्त अंगवाले दिव्य पुष्पों से सुशोभित तुलसी के कोमल दलों की वनमाला से विभूषित, कोटि बाल सूर्य के समान कांतिमान् और दिव्य कांति से सुन्दर समस्त लक्षणों से युक्त महालक्ष्मी को शरीर से धारण करने वाले कल्याण रूप श्री विष्णु का ध्यान कर । एकाग्र मन से पवित्रता पूर्वक मंत्र का जप करे ! एक हजार या एक सौ अथवा यथाशक्ति मन में जप करे और मन से ही विधि पूर्वक सम्प्रदाय के अनुसार मेरे सामने शंख स्थापन करे । दुर्वा पुष्प चंदन तथा जल से पूर्ण करे । अपने दक्षिण भाग में गंध पुष्प का पात्र स्थापित करे और वाम भाग में वस्त्र से छना हुआ सुगन्धित जल से पूर्ण घट को स्थापित कर मेरे सम्मुख घंटा तथा चारों दिशाओं में दीपक स्थापित तथा पूजा की सब सामग्री यथोचित स्थापित करे तथा अर्घ्य पाद्य आचमन और मधुपर्क के पात्र रखे हे चतुर्मुख अक्षत पुष्प कुशा तिल चंदन फल तथा यव अर्घ्य पात्र में

छोड़े। हे पुत्र दुर्वा गंगाजल तथा कमल पुष्प को मेरी प्रसन्नता के लिये पाद्य पात्र में छोड़े कंकोल लवंग और मालती के पुष्प को श्रद्धा से मेरे लिये आचमीय पात्र में पूजा करने वाला श्रद्धा से मधुर्पक पात्र में गौ का दूध घी दही मधु और चीनी को रखे। ऊपर कही हुई पत्र पुष्प आदि वस्तुओं के न मिलने पर उनकी भावना मात्र कर लेवे और फिर सम्प्रदाय के अनुसार पंचांग तथा षड्डाङ्ग न्यास और अंगन्यास करे मेरा अनुस्मरण करे और अपनी आत्मा को मेरे समान स्मरण करे। हे चतुर्मुख! पूजा के आरंभ में मंगल पाठ को पढ़े। इसके पश्चात् मेरे प्रिय पांच जन्य शंख का पूजन करें। जिसके पूजन से मुझको परम आनन्द प्राप्त होता है, हे वत्स! शंख के पूजन में इन मंत्रों को पढ़े, हे पांच जन्य पहले तुम समुद्र से उत्पन्न हुए फिर, श्री विष्णु भगवान ने तुमको अपने हाथ में धारण किया, तुम समस्त देवताओं से निर्मित हो तुमको

नमस्कार है, तुम्हारे नाद से देव शत्रुओं की स्त्रियों के गर्भ पाताल लोक में हजार टुकड़े हो जाते हैं, आपको नमस्कार है। आपके नाद से मेघ तथा सुर और असुर भयभीत हो जाते हैं। हे अच्युत! चन्द्रमा के समान दिव्य कान्तिमान् पांचजन्य आपको नमस्कार है। जैसे सूर्य के उदय होते ही ठण्ड नष्ट हो जाती है, वैसे ही तुम्हारे दर्शन से सब पाप नष्ट हो जते हैं। यदि ऐसे शंख का स्पर्श किया जाय तो उसका तो कहना ही क्या है?

शंख को नमस्कार करके हाथ में रखकर जो वैष्णव भक्ति पूर्वक इन मंत्रो से मुझको स्नान कराता है उनको अनन्त पुण्य प्राप्त होता है फिर सुगंधित तेल कस्तूरी, चंदन तथा उवटन आदि मेरे शरीर को लगावे, सुगंधित जल से मन्त्र पाठ पूर्वक मुझको स्नान कराकर अर्घ्य, पाद्य, आचमनीय, तथा मुधुपर्क आदि मुझे अर्पण करें, और यथाविधि दिव्य वस्त्र, भूषणों से अलंकृत कर

पुष्पों से पीठ (सिंहासन) का पूजन करे और उस पर मेरी मूर्ति को स्थापित करे तथा श्रद्धा से मेरे लिए वस्त्र अलंकार आदि अर्पण करे। खीर मालपूवे युक्त अनेक प्रकार के नैवेद्य अर्पण करे और कर्पूर युक्त ताम्बूल भक्ति से मेरे सामने रखे और सुगन्धित फूल अर्पण करे। दशांग धूप तथा अष्टांग मनोहर दीपक निवेदन करे, प्रणाम करके आदर पूर्वक मेरी स्तुति करके शय्या पर शयन कराके मंगलार्घ्य निवेदन करे।

इति श्रीस्कन्द महापुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा शंख पूजा विधि चौथा अध्याय समाप्त हुआ।

---

## अथ पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्माजी कहने लगे कि हे अजित! श्री विष्णु को पंचामृत से तथा शंख में जल डालकर स्नान करानेसे जो फल मिलता है सो कृपा करके मुझसे

कहिए। भगवान् कहने लगे जो मनुष्य मुझको दुग्ध से स्नान कराते हैं उनको प्रत्येक बिन्दु में सौ अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है, दही से स्नान कराने से दुग्ध से दस गुणा, घृत से दही से दस गुणा, मधु से स्नान कराने से घृत से दस गुणा और मधु से दस गुणा फल चीनी से स्नान कराने से मिलता है। मन्त्र पढ़कर गन्ध, पुष्प, जल चढ़ाने से सबसे अधिक फल कहा गया है। हे देवताओं में सिंह। जो मनुष्य द्वादशी तथा पूर्णमाशी के दिन गौ के दूध से मुझको स्नान कराता है वह महा पापों का नाश करने वाला है। जैसे दूध से दधि, घृत आदि सब पदार्थों की उत्पत्ति कही कई है इसी तरह दुग्ध स्नान से सब कामनाओं की सिद्धि होती है। दुग्ध स्नान से सौभाग्य की प्राप्ति, दधि स्नान से मिष्टान्न भोजन और घृत से स्नान कराने से मेरे लोक की प्राप्ति होती है। मार्गशीर्ष मास में जो मुझको चीनी और शहद से स्नान कराता है वह स्वर्ग

के सुख भोगकर फिर इस लोकमें राजा होता है जो मनुष्य मार्गशीर्ष में मुझको दुग्ध से स्नान कराता है वह मनुष्य इस पृथ्वी पर राज, अश्व और रथों से पूर्ण राज पाता है। जो मार्गशीर्ष मास में मुझको परम श्रेष्ठ दुग्ध से स्नान कराता है वह स्वर्ग में श्रेष्ठ माना जाकर चन्द्रलोक, इन्द्रलोक रुद्रलोक और वायुलोक में पूजित होता है। हे पुत्र! दुग्ध से स्नान कराने पर तेज और पुष्टि की वृद्धि होती है और दुर्भाग्य नाश होता है। जो मनुष्य मार्गशीर्ष मास में मुझको पंचामृत से स्नान कराता है वह पृथ्वी पर बन्धुगणों से शोचनीय नहीं होता। हे पुत्र! जो कपिला गौ के दूध से मुझको स्नान कराता है वह सौ कपिला गौ के दान का अधिकारी होता है। जो मार्गशीर्ष मास में मुझको पंचामृत से स्नान कराता है वह एक बिन्दु से भी अपने कुल का उद्धार करता है जो मनुष्य कपिला गौ के दूध को शंख में भरकर भक्ति से मुझको स्नान कराता है वह समस्त

तीर्थों का भागी होता है। जो शंख में अक्षत कुशा जल डाल कर मार्ग शीर्ष में मुझको स्नान कराता है वह भी समस्त तीर्थों के फल का भागी होता है जो मनुष्य मार्ग शीर्ष मास में शंख के जल से आठ बार स्नान कराता है वह श्रेष्ठ हो जाता है और मेरे लोक में पूजित होता है और जो सोलह बार शंख जल से मुझे स्नान कराता है, वह पापों से मुक्त होकर स्वर्ग लोक में देवताओं से भी पूजित होता है। जो चौबीस बार शंख जल से मुझे स्नान कराता है वह चिरकाल तक इंद्र लोक में वास करने के पश्चात् इस लोक में राजा होता है। जो १०८ बार शंख जल से मुझ को स्नान कराता है, वह मनुष्य प्रत्येक शंख में सुवर्ण (१६ माशे का एक सुवर्ण होता है) के दान के फल का अधिकारी होता है। जो भक्त मार्ग शीर्ष मास में शंख ध्वनि करके मुझको स्नान कराता है, उसके पितर उतने से ही स्वर्ग में प्रतिष्ठित होते, हैं जो १००८ बार शंख जल से मुझ को स्नान कराता है, वह सपरिवार

महाप्रलय पर्यन्त मुक्ति फल का भागी होता है, हे सुर श्रेष्ठ जो नित्य ही शंख जल से मुझको स्नान कराता है वह नित्य ही गंगा स्नान का भागी होता है, और देवता के समान आनन्द के फल करता है, हे पुत्र ! जो 'नमोनारायण' इस मंत्र को पढ़ कर शंख जल से मुझको स्नान कराता है वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। जो शंख में तिल और चर्णामृत रख कर वैष्णव माहात्मा जनों को देता है वह चांद्रायण व्रत के फल का भागी होता है। नदी, कूप, तालाब और बावली के जल को भी शंख में रखने से सब गंगा के जल के तुल्य हो जाता है। जो वैष्णव मेरे चरणामृत को लेकर शिर से धारण करता है वह तपस्वियों से भी श्रेष्ठ मुनि है। हे पुत्र त्रैलोक्य में जितने भी तीर्थ हैं वह सब मेरी आज्ञा से इस लोक में शंख में वास करते हैं इसी कारण शंख को श्रेष्ठ कहा गया है, जो वैष्णव मार्गशीर्ष मास में शंख में जल भर कर इन मंत्रों से मुझको स्नान कराता है उस पर मैं

अत्यन्त प्रसन्न होता हूँ' शंख के आदि भाग में चंद्रमा देवता शंख की कुक्षि में वरुण देवता, शंख के पृष्ठ भाग में प्रजापति देवता, और शंख के अग्र भाग में गंगा तथा सरस्वती वास करती हैं, जो इन देवताओं का नाम लेकर आलस्य रहित होकर मुझे स्नान कराता है, उनके पुण्य की संख्या देवताओं से भी नहीं हो सकती! हे देवेश जिसने मेरे सामने पुष्प, जल, अक्षत से युक्त कर शंख पूजन किया उसके घर में सर्वत्र सुख वाली लक्ष्मी वास करती है, जो शंख को चन्दन से पूर्णकर मेरा भजन करता है तो मुझे सौ वर्ष के लिये सुख प्राप्त होता है। जो शंख में जल पुष्प और अक्षत रख कर मुझे अर्घ्य देता है, उसको अनन्त पुण्य प्राप्त होता है जो शंख में अर्घ्य लेकर मेरी प्रदक्षिणा करता है, उस प्रदक्षिणा से सप्तद्वीप सहित सब पृथ्वी की हो जाती है। जो वैष्णव मेरे सिर पर घुमा कर शंख जल से मन्दिर का प्रोक्षण (छिड़काव) करता है उसके घर में कभी अशुभ नहीं होता। जो मेरे

चरण जल को लेकर शंख में रख कर अपने सिर लगाता है, उसको न तो मानसिक चिंता होती है न ग्लानि होती है और न नारकीय भय होता है, शिर पर शंख जल को देख कर ग्रह, राक्षस, पिशाच, सर्प और दानव यह सब दश दिशाओं में भाग जाते हैं, जो उच्च स्वर से वाद्य बजा कर और मांगलिक गीत स्वर से भक्ति पूर्वक मुझ को स्नान कराता है वह अवश्य जीवन मुक्त हो जाता है।

इति श्री स्कन्दपुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य
पं० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा शंख पूजा
पांचवां अध्याय समाप्त हुआ

## छटवां अध्याय

ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे भगवन् घंटानाद और चंदन का माहात्म्य ठीक २ कहिए। भगवान् कहने

लगे कि हे देवेश ! जो स्नान और पूजन के समय घंटा नाद करता है उसका फल सुनिये, वह मनुष्य हजारों और असंख्य कोटि वर्ष पर्यन्त अप्सराओं से सेवित मेरे लोक में वास करता है क्योंकि घंटा में समस्त बाजे और देवताओं का वास कहा गया है, इसलिए सब प्रकार से घंटानाद करावे, समस्त वाद्यमयी घंटा मुझको अत्यन्त प्रिय है। इसके वादन से शत कोटि यज्ञ का फल मिलता है, विशेष करके मेरे पूजन के समय भेरी और घंटानाद करे तो हजार मन्वतर वर्ष पर्यन्त तथा असंख्य मन्वतर वर्ष में प्रसन्न रहता हूँ, मृदंग और शंखनाद के प्रणव (ओंकार) ध्वनि को मिलाकर अर्थात् ओंकार ध्वनि को करता हुआ मेरा पूजन करता है वह निरंतर मोक्ष को प्राप्त होता है, हे पुत्र ! जिस जगह मेरे सामने नाद से युक्त वैष्णवों से पूजित घंटा स्थित रहता है वहाँ पर मुझको ही स्थित समझो, जो मेरे सामने गरुड़ के चिन्ह से युक्त अथवा सुदर्शन चक्र के चिन्ह से युक्त घंटा को स्थित

करता है उसके सब पापों को मै हरता हूँ। जो मेरे पूजन के समय घंटा नाद करता है उसके सौ जन्मों के पापों को मै हरता हूँ, जो मेरे पूजन के समय अथवा शयन के समय घंटा नाद करता है उसको कोटि गुणा फल मिलता है। जो मनुष्य गरुड़ पर स्थित, शंख, चक्र, गदा, पद्मसे युक्त तथा लक्ष्मी से युक्त मुझ देवेश का पूजन करता है, उनको देवता दर्शन, व्रत, दान, उपवास और तीर्थ आदि करने की कोई आवश्यकता नहीं रहती, जो मनुष्य कलि में गरुड़ के ऊपर मेरी मूर्ति स्थापित करेंगे वह कल्प कोटि वर्ष पर्यन्त वास के लिये मेरे परम् पद को जायेंगे। जो मेरे सामने मन्दिर में, या घर में गरुड़ से युक्त घंटा को स्थापित करते हैं, वहाँ पर सहस्त्रों कोटि देवता और तीर्थ वास करते हैं, जो एकादशी को तथा रात्री को मेरी वासना से युक्त होकर गरुड़ पर स्थित मेरी पूजा करता है वह धन्य है और गान नृत्य करता है तो वह नरक में गये पितरों को भी तार देता है। हे पुत्र। सुनो मैं

और भी घंटा के माहात्म्य को कहता हूँ, जो घंटा मेरे सामने मेरे नाम से अंकित और वैष्णवों से पूजित होकर, जहाँ पर रहता है वहाँ पर तुम मुझ को ही स्थित समझो, जो गरुड़ से युक्त घंटा को मेरे स्नान, पूजन चंदन विलेपन धूप और दीप के समय बजाता है, वह प्रतिदिन मेरे सामने इस नाम से दश हजार यज्ञ इतने ही गोदान और असंख्य चान्द्रायण व्रत के फल का भागी होता है। घण्टा नाद के साथ विधि से रहित भी पूजा सफल होती है और मेरा परमपद प्राप्त होता है। गरुण से चिन्हित तथा चक्र से चिन्हित घंटा कोटि जन्म के भय को नाश करता है। हे देवेश! गरुड़ से चिन्हित घंटा को देखकर मैं प्रतिदिन वैसे ही प्रसन्न होता हूं जैसे निर्धन मनुष्य लक्ष्मी को देखकर प्रसन्न होता है, जो घंटा दंड के ऊपर शिर भाग में चक्र को अथवा मेरे प्रिय गरुण को स्थापित करता है वह तीनों लोकों को स्थापित करता है, जो अन्त (मरण) समय में घंटा के नाद

को सुनता है, कोटि पापों से मुक्त होने पर भी यमराज के दूत उसके समीप नहीं आते, हे पुत्र! घंटा नाद से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और देवताओं, रुद्रों तथा पुत्रों के उत्सव का कारण होता है। गरुड़ के अथवा चक्र के चिन्हों से चिन्हित न रहने पर भी घंटा नादसे मैं भक्तों पर प्रसन्न रहता हूँ, जिसके घर में गरुड़ से चिन्हित घंटा रहता है, उस घरमें सर्पों का भय नहीं होता और अग्नि तथा वज्रघात का भी भय नहीं रहता, जिसके घर में मेरे सामने घंटा और शंख स्थित नहीं होता वह कैसे भगवान और कैसे मेरा प्रिय हो सकता है।

अब मैं चन्दन का महात्म्य तुमसे कहता हूं जिसको मेरे अर्पण करने से निःसन्देह मुझे अत्यंत प्रसन्नता होती है। पुष्प, कपूर, अगा कस्तूरी जायफलसे युक्त चंदन को अथवा मुझको अत्यन्त सुखदाई तुलसी के काष्ट के चंदन को मेरे लिये नित्य ही देता है, मनुष्यों में श्रेष्ठ कलि में भगवान्

का भक्त अनन्त युग पर्यंत स्वर्ग में जाकर वास करता है। जो तुलसी काष्ट को मेरे लिए देता है अथवा मालती के पुष्पों से मेरा पूजन करता है। वह फिर माता के स्तनों से दुग्ध पान करने वाला नहीं होता अथवा वह फिर जन्म नहीं लेता। मैं तुलसी काष्ठ के चन्दन को अर्पण करने से सौ जन्मों में किये हुये पापों को नष्ट कर देता हूँ क्योंकि समस्त देवताओं को तुलसी काष्ट का चन्दन अति प्रिय है वैसे ही पितरों को भी विशेष करके अति प्रिय है। जब तक अति पवित्र तुलसी काष्ट का चन्दन मेरे लिये पूजा में अर्पित देखने में नहीं आता तभी तक श्री खराड चन्दन श्रेष्ठ है और तभी तक अंगूर श्रेष्ठ हैं, और तभी तक कस्तूरी और कपूर सुगन्धित है। जो लोग कलियुग में मेरे लिए मार्ग शीर्ष मास में तुलसी काष्ट का चन्दन देते हैं वे कृतार्थ हो जाते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं। है। जो भगवान् होकर कलियुग में मार्गशीर्ष मास में तुलसी काष्ठ के चन्दन को नहीं

देता है वह मनुष्य भागवान् ( भगवद्भक्त ) नहीं है। जो मार्गशीर्ष मास में कुंकुम, अंगूर, कस्तूरी श्रीखंड और चन्दन से मेरे शरीर में लेप करता है वह कोटि कल्प पर्यन्त स्वर्ग में वास करता है। जो कपूर अंगूर को मिलाकर चन्दन से और मुझको विशेष रूप से प्रिय कस्तूरी से लेपन करता है सौर शंख में चन्दन रखकर उस चन्दन से मेरे लेपन करता है तो मैं उससे सौ वर्ष के लिए प्रीति करता हूँ। जो सदैव मार्गशीर्ष मास में भक्ति पूर्वक तुलसी पत्रों से तथा आंवलों से मेरी नित्य सेवा करता है। वह इच्छित फल का भागी होता है।

इति श्रीस्कन्द महापुराणे मार्गशोर्ष मास माहात्म्य
ज्योतिषाचार्य प० जगन्नाथ शर्मा कृत
भाषा तुलसी चन्दनार्पण
छठा अध्याय समाप्त हुआ।

———

## अथ सातवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे भगवन् ! मनुष्य को जिस-जिस पुष्प से जो-जो फल मिलता है समस्त पुष्पों के महात्म्य को कहिए। भगवान् कहने लगे कि हे ब्रह्मन् ! जिस पुष्प से मुझको अत्यन्त प्रसन्नता होती है उन सब पुष्पों का फल मैं तुमसे कहता हूं। मल्लिका ( बेला ) मालती ( चमेली ) युथिका ( जूही ) अति मुक्तिका ( तेंदुवा) पाटली करवीर जयन्ती, विजया ( भंग कुब्जक ) तवक ( कनेर) कर्णिकार ( कुरंटक ) चम्पक (चम्पा ) चातक, वाण, कुन्द, कचूर, अशोक, तिलक, ये पुष्पों के भेद मेरे पूजन में श्रेष्ठ कहे गए हैं। केतकी के पत्र और पुष्प भृंगराज (भंगरा) तुलसी के पत्र और पुष्प (मंजरी) यह सब तत्काल मेरी प्रीति को बढ़ाने वाले

हैं। जल से उत्पन्न होने वाले रक्त नील श्वेत भेद के कमल मार्गशीर्ष मास में मुझको अत्यन्त प्रिय हैं। हे पुत्र! मुझको वही पुष्प प्रिय है जो सुन्दर तथा रूप, रस और गन्ध से युक्त हैं। मुझको बिना गन्ध के पुष्प भी सिवाय केतकी के सब प्रिय हैं। वाण, चम्पा, अशोक, करवीर, यूथिका (जुही) परिभद्र (देवदारू) पाटल (गुलाब) मौलसिरी गिरिशानिली, बिल्व पत्र, शमी पत्र (जांट की पत्ती) भंग राजपत्र (भंगरे का पत्र) तमाल, (पत्रज) और आमला के पत्र ये सब पत्र मेरे पूजन में श्रेष्ठ कहे गये हैं, वन में पर्वत में उत्पन्न तत्काल का उतरा हुआ, छिद्र रहित, जल से धुला जन्तु से रहित पत्र तथा पुष्पों से मेरा पूजन किया जाता है, बाग में उत्पन्न पुष्पों से मेरा पूजन किया जाता है, विशेष जाति के पुष्पों से पूजन करना विशेष फल के देने वाला होता है, तप, शील, और गुणों से युक्त वेद के पारंगत पात्र ब्राह्मण को दश सुवर्ण (दश तोला सोना) का दान देने से जो फल

मिलता है वह फल मनुष्य मार्ग शीर्ष में पुष्प दान से पाता है, तथा जो एक द्रोण पुष्प को मेरे लिये देता है उसको दश सुवर्ण (दश तोले सोने) से भी अधिक फल प्राप्त होता है। अब गुणों का भेद सुनिए हजार द्रोण पुष्पों से रविदर का पुष्प अधिक श्रेष्ठ फल देता है, हजार रविदर पुष्पों से एक शमी पुष्प, हजार शमी पुष्पों से एक बिल्व पुष्प, और हजार बिल्व पुष्पों से एक वक पुष्प, तथा हजार वक पुष्पों से एक नद्यावर्त पुष्प, और हजार नद्यावर्त पुष्पों से एक करवीर पुष्प, हजार करवीर पुष्पों से एक श्वेत करवीरपुष्प, हजार श्वेत करवीर पुष्पों से एक पलाश (ढाक) पुष्प, हजार पलाश पुष्पों से एक कुश पुष्प, तथा हज़ार कुश पुष्पों से एक वनमाला, तथा हज़ार वनमालाओं सें एक चम्पा का पुष्प, और सौ चम्पा के पुष्पों सें एक अशोक का पुष्प, और हजार अशोक पुष्पो सें एक सेवती का पुष्प, हज़ार सेवती के पुष्पों से एक कुजक पुष्प हज़ार कुजक पुष्पों से एक मालती का पुष्प,

हज़ार मालती के पुष्पों से एक संध्या पुष्प, और हज़ार संध्या पुष्पों से एक त्रिसंध्या पुष्प और हज़ार त्रिसंध्या पुष्पो से एक लाल रंग का त्रिसंध्या पुष्प हज़ार लाल रंग के त्रिसंध्या पुष्पों से एक श्वेत रंग का त्रिसंध्या पुष्प हज़ार श्वेत रंग के त्रिसंध्या पुष्पों से एक कुंद पुष्प और हज़ार कुंद के पुष्पोसे एक जाती पुष्प[जायफलका पुष्प] श्रेष्ठ है इन समस्त जातियोंके पुष्पों न जाती पुष्प उत्तमहै।

जो हज़ार जाती पुष्पों की सुन्दर माला मुझे अर्पण करता है उसका फल सुनो वह पुरुष हज़ार कोटि कल्प वर्ष पर्यन्त तथा असंख्य कोटि वर्ष पर्यन्त मेरे समान पराक्रमशाली होकर मेरे पुर में वास करता है मेरे पूजन में जिन-जिन वृक्षों के पुष्प उत्तम कहे गये हैं उन पुष्पों के अभाव में उन वृक्षों के पत्रों और फलों से भी पूजन हो सकता है इन पत्र पुष्प और फलों से पूजन करता हुआ प्रत्येक पत्र पुष्प फलों से दश सुवर्ण दान के फल का भागी होता है जो इस मार्गशीर्ष मास में

इन विभिन्न जाति के पुष्पों से मेरा पूजन करते हैं, उस पूजन से मैं अत्यन्त प्रसन्न होता हूं, और उन पूजकों को भक्ति देता हूं, इसमें कोई संशय नहीं है हे, देवेश ! मेरा वह भक्त धन, पुत्र स्त्री आदि जिस चीज की भी इच्छा करता है इन पुष्पों से प्रसन्न होकर मैं सब कुछ देता हूँ।

इति श्री स्कन्द महापुराणे मार्गशीर्ष मासमाहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथशर्मा कृत भाषा पूजन पुष्प अर्पण सातवाँ अध्याय समाप्त हुआ ॥७

## आठवां अध्याय

ब्रह्मा जी कहने लगे कि भगवन् ! श्री तुलसी का माहात्म्य ठीक-ठीक कहिए जिसके निकट रहने परही आपको अत्यन्त प्रीति है। भगवान् कहने लगे कि हे ब्रह्मन् ! मणि के पुष्प स्वर्ण पुष्प तथा मुक्ता

के बने हुए पुष्प तुलसी पत्र के दाने से सोलहवीं कला के भी बराबर नहीं है। जो मनुष्य तुलसी की मंजरी से मेरा पूजन करता है वह फिर कभी गर्भ योनि में नहीं आता और मोक्ष को प्राप्त हो जाता है जो मनुष्य तुलसी के वृक्ष के गमले आदि में रोप कर उसके दलों से मेरा पूजन करता है वह स्वर्ग में तथा मेरे श्वेत द्वीप गृह में आनन्द करता है जिसने स्रावत निर्मल सुगन्धि युक्त तुलसी पत्र से मेरा एक बार भी पूजन किया है यमराज पट पर लिखे हुए भी उसके पापों को मिटा देता है जिसने एकादशी तथा दूसरे पवित्र दिनों में मेरी पूजन तुलसी से नहीं की उसके यौवन तथा जीवन को धिक्कार है और उनको न इसलोक में नां ही परलोक में ही धन और संतति का सुख प्राप्त होता है मार्ग शीर्ष मास में तुलसी दल से मेरा पूजन होते हुए देखकर ही मनुष्य ब्रह्म इत्यादि पापों से छूट जाता है। जो मेरी (लक्ष्मी पति) की नित्य ही तुलसी से पूजन करता है,

उनके महान पाप भी नाश हो जाते हैं फिर मामूली पापों का तो कहना ही क्या है, मेरे पूजन में वासी पुष्प और वासी जल यद्यपि वर्जित हैं पर तुलसी पत्र और गंगाजल कभी भी वर्जित नहीं हैं।

हे पुत्र ! मालती आदि के पुष्प तभी तक मेरी पूजा में गर्जना करते हैं जब तक तुलसीपत्र नहीं मिलते हैं। जो मनुष्य एक बार भी विल्वपत्र से मेरी पूजन करता है वह मेरी सामीप्य मुक्ति का भागी हो जाता है और सब आतंकों से छूट जाता है। विल्वपत्र से शमीपत्र से, जाति पत्र से, जाति पुष्प से, कमल से और कौस्तुभ मणि से भी तुलसी पत्र मुझको अधिक प्रिय है। मेरे हृदय को आनन्द देने वाली मंजरी युक्त सावत पत्र वाली तुलसी, चीर सागर से उत्पन्न होने वाली लक्ष्मी से भी मुझको अधिक प्रिय है। जैसे एकादशी कृष्ण पक्ष की हो या शुक्ल पक्ष की मुझको दोनों ही अत्यन्त प्रिय हैं वैसे ही चाहे

श्वेत हो अथवा कृष्णा दोनों ही तुलसी मुझको अत्यन्त प्रिये हैं। जो भक्तिपूर्वक तुलसी से मेरा पूजन करता है, उस पूजन से देवता, असुर और मनुष्य सभी का पूजन हो जाता है। मुझको प्रसन्न करने के लिए कौस्तुभ आदि मणि रत्न तभी तक गर्जते हैं जब तक कृष्णा मंजरी युक्त कृष्णा तुलसी प्राप्त नहीं होती। जो मनुष्य कृष्णा तुलसी से भक्ति पूर्वक कृष्णा भगवान् का पूजन करता है वह उज्ज्वल भुवन अर्थात् विष्णु लोक को जाता है, जहाँ लक्ष्मी के सहित भगवान् विष्णु निवास करते हैं, जो मुरे पूजन के लिए भिक्षुओं की तथा दूसरे वैष्णवों को तुलसीदल देते हैं, वे लोग अविनाशी पद को प्राप्त होते हैं। जो मनुष्य तुलसी से अथवा श्वेत तुलसी से मेरा पूजन करते हैं, वह शरीर को छोड़कर सदैव के लिए वैष्णव गति को प्राप्त होते हैं।

तब ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे भगवन् धूप-दान तथा दीपदान के करने से क्या फल मिलता

है, इसका ठीक ठीक माहात्म्य कहिये। भगवान् कहने लगे कि हे पुत्र! धूपदान और दीपदान जो मुझ को अत्यन्त प्रिय हैं माहात्म्य सुनिये। मार्गशीर्ष मास में कोई भी व्यक्ति कपूर और दिव्यचंदन का सुगन्धित धूप मुझे अर्पण करके सौ कुलों का उद्धार कर लेता है। जो मनुष्य कृष्ण वर्ण के अगरु के धूप से मेरे मन्दिर को अर्पित करता है वह नरक रूपी समुद्र को पार हो जाता है। जो भैंस के घी में गुग्गुल और चीनी मिला कर मुझको धूप देता है उसकी सब इच्छाओं को मैं पूर्ण करता हूं। धूप किया हुआ गुग्गुल समस्त कष्टों को नाश करता है और धूपित अगरु सब कामनाओं को पूर्ण करता है। अगरू का धूप देह और गृह को पवित्र करता है तथा समस्त रसों का धूप यक्ष और राक्षसों का नाश करता है जाती पुष्प, इलाइची, गुग्गुल, हड़, कूठ, राल, गुड़, शैला छड़ और नख इन दस चीजों को मिलाकर दशांग धूप कहते हैं। जो मार्गशीर्ष

मास में दशांग धूप मुझे अर्पण करता है तो मैं उसको दुर्लभ कामनाओं को देता हूँ तथा बल पुष्टि पुत्र स्त्री तथा भक्ति को देता हूँ। नागर मोथा का धूप मनुष्यों को प्रिय बनाने वाला है मंगल को करने वाला और दूसरों को वश में करने वाला है। मार्गशीर्षमें नागरमोथा का धूप अथवा गुड़ के धूप जो मुझे अर्पण करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर मुझको प्राप्त होता है। मेरे निमित्त किये गये धूप के शेष (बचे हुये) धूप से जिसका शरीर धूपित होता है, उसको स्वर्गभूमि और अंतरिक्ष (आकाश) सम्बन्धी किसी प्रकार का भय नहीं होता। मार्गशीर्ष मास में मेरे सामने श्रद्धा से निरन्तर धूप अर्पित करने पर किसी प्रकार की आपत्ति नहीं आती और सब सम्पदायें प्राप्त होती हैं, धूप सुन्दर रूप धारण करता है, धूप उत्तम और पवित्र है तथा वनस्पतियों का रस दिव्य, परम पावन तथा शुद्ध है।

अब इसके पश्चात् दीप दान का माहात्म्य कहते हैं, जिसके करने से मनुष्य बैकुंठ लोक को प्राप्त होता है इसमें कोई संशय नहीं है। जो बहुत सी बत्तियाँ घी में भिगोकर आरती करता है वह कल्प कोटि वर्ष तक स्वर्ग में वास करता है, जो मार्गशीर्ष मास में मेरे सम्मुख खड़ा होकर मेरी आरती देखता है वह सात जन्म तक विप्र होता है और अन्त में सालोक्य मुक्ति को प्राप्त होता है, जो मेरे सामने कपूर की आरती करता है, हे द्विजोत्तम ! वह अनन्त स्वरूप मुझमें आकर प्रवेश करता है, हे पुत्र ! नीराजन करने पर मंत्र हीन क्रिया हीन पूजन भी सम्पूर्ण फल को देता है। जो मार्गशीर्ष मास में कपूर का दीपक जलाता है, वह अश्वमेध यज्ञ के फल का भागी होता है, तथा उसके सारे कुल का उद्धार हो जाता है। जो मेरे सामने, ब्राह्मणों के सामने या चौराहे में दीपक जलाता है वह मनुष्य बुद्धिमान्, ज्ञान से सम्पन्न और चक्षुष्मान् होता है। जो मार्गशीर्ष

मास में मेरे सामने घृत का अथवा तेल का दीपक जलाता है उसके फल को सुनिये। समस्त पापों को त्याग कर हजार सूर्य के समान तेजमान् होकर चमकता है. फिर विमान में बैठकर मेरे लोक में सब से पूजित होता है, अतः विद्वान् पुरुष अवश्य दीपक जलावें, जो दीपक जलाकर उसको बुझा देता है वह अवश्य नरक में जाता है, हे द्विजोत्तम जो पातकी लोभ से अथवा द्वेष से दीपक की चोरी करता है, वह अवश्य गूंगा होता है और अन्धा भी होता है।

इति श्रीस्कन्द पुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथशर्मा कृत भाषा धूप-दीप महात्म्य वर्णन आठवां अध्याय समाप्त हुआ ॥८॥

## नवां अध्याय

ब्रह्माजी कहने लगे कि भगवन् नैवेद्य में अन्न कितने प्रकार का होना चाहिए, और व्यंजन

कितने प्रकार का होना चाहिए ? सो आप ठीक-ठीक कहिये। भगवान् कहने लगे कि हे वत्स ! तुमने अति सुन्दर वार्ता पूछी है जो मुझको अत्यन्त प्रसन्न करने वाली है, सो मैं अन्न पानादि का तथा समस्त व्यंजन आदि का वर्णन करता हूँ। हे अनघ ! सुवर्ण का पात्र होना चाहिए, उसके अभाव में चाँदी का अथवा उसके भी अभाव में पलाश का बहुत सुन्दर लम्बा चौड़ा पात्र होना चाहिए, ऐसे पात्र में चारों तरफ सजाकर सैकड़ों कचौरी आदि और नाना प्रकार के उत्तम फलों के बने हुए व्यंजन रखे, चन्द्रमा के समान सफेद चीनी, से युक्त पायस (खीर) और श्वेत कमल के समान पका हुआ चावल, तथा काँच के समान प्रभाव वाले सुन्दर मूंग की दाल रखे, तथा नीबू का रस, चन्द्रक फल, मूली के टुकड़े में मिला कर रक्खे, मेरे भोजन में सैकड़ों प्रकार की चटनी आदि पदार्थ बनावे, और किसमिस मिला हुआ आम का रस, मिरच

पीपल, अदरख, इलायची, चन्द्रक को हाथ से मलकर, चटनी, कढ़ो आदि कहे गए सैकड़ों प्रकार के भोजन मेरे निमित्त बनावे और कचौरी आदि सैकड़ों प्रकार के तथा नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से पात्र को पूर्ण करे, ये सब व्यंजन मार्गशीर्ष मास में अति प्रिय हैं, पके हुए दूध का मिश्री युक्त गोलाकार एक समान रमणीय मंडक बनावे, दूध पकाकर शहद के समान रंग का हो जाय उस दूध को भोजन में रक्खे, सुन्दर कचौरियों पर सुवर्ण के रंग का सुन्दर और सुवासित घी को मेरे भोजन में रक्खे और चन्द्रमा के समान सफेद सुहानी, पूरी, इमरती जलेबी माल पूआ तथा दूध के बने हुए पेड़ा, कलाकन्द आदि अनेक प्रकार के पदार्थ बनाले, मणि, सूत फेनी, मालती फूल आदि, काशीफल, उड़द के बने पापड़, बड़ी आदि तथा नौ प्रकार के सुन्दर बड़े बनावे, दो प्रकार के जाती फल, लवण के अति शुद्ध तेल के कुंमकुम के सामान कांति

वाले, और देखने में दुर्जन के समान रूखे, कुछ दही के कुछ दूध के, कुछ सोंठ के, कुछ आम के, कुछ किसमिस के, कुछ ईख के रस के, कुछ जल-जीरे के और कुछ मिश्री डाल बनावे, चार प्रकार के तथा नौ अन्य प्रकार के रसों को डालकर नौ प्रकार के बरों को बनावे, वज्र प्रभा, अनुकणिका चार चीज, उत्तम नारियल के टुकडे करके सैकड़ों लंवगों से युक्त करे। घृत, दूध, मिश्री आदि सबको कड़ाही में भूनकर बनाये हुए पदार्थ, खिचड़ी चिकनी फेनी पराकी चंद्रपोलिका और चार बीज के बने हुए लड्डू मिश्री तथा दूध के बने नारियल फल के बने और वृक्ष निर्यास (गोंद) के बने बादाम छुहारा तथा तिलों के बने हुए और भी कई एक प्रकार के मोदक बनाये सूरण मोचनीकंद आर्द्र करमर्दक नारंगी इमली कक्कोल फल दशार त्रिपुरी जात सुन्दर निम्ब का फल तिन्दूफल लंवग वेल काला नमक लूती वल्कल वंशकारीर कायफल बल किसमिस आम्रफल केला पीपर मनोहर मिर्च

डालकर शुद्ध सरसों के तेल से नमक जीरा डा
कर तीन वर्ष तक घर में रखकर सुन्दर अचार बनां
हे मानव ! इतने प्रकार के व्यंजन मुझको अ
प्रीति कर हैं। मार्गशीर्ष में इन सबको बनावे, य
कोई मनुष्य इस प्रकार के भोजन बनाने में असम
हो तो वह जो भोजन मुझे अर्पण करे वह संक्षे
में सुनिये। एक घेवर एक लड्डू, दो फेनी ती
खजूर सोलह घृत में बने हुए पंरावठे' आठ वड़
इतने भोजन देने वाला मनुष्य नरक में नहीं जात
आधा आढक (दो सेर) दूध सोलह पय (६४ तोल
चंद्रमा के समान सफेद चीनी, एक पल (चार तोल
घी, एक पल शहद, अदूह मिरच आधा पल सों
अथवा चारों वस्तुएं आधा आधा पल लेकर उनक
स्त्री कोमल हाथों से धीरे २ पीसे, तथा सुन्द
चिकने वस्त्र में छान कर कपूर के चूर्ण से वासि
पात्र में रख कर सुंदर रस वाली जो वस्तु मनु

बनाता मुझे अर्पण करता है उनकी मैं समस्त कामनाओं को पूर्ण करता हूँ।

इति श्री स्कन्दपुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा नैवेद्य विधि नाम नववां अध्याय समाप्त हुआ

## दसवां अध्याय

ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे प्रभो ! नैवेद्य अर्पण करने के पश्चात् मार्ग शीर्ष मास में मनुष्य का क्या कर्तव्य है सो आप ठीक २ कहिए भगवान् कहने लगे कि भोजन करने के पश्चात् कपूर सुवासित जल से आचमन करावे और जल तथा चंदन हाथ शुद्ध करने के लिये देवे और मुख शुद्धि के लिये ताम्बूल अर्पण करें उसके पश्चात् पुष्पांजलि देकर भक्ति दर्पण दिखावे फिर कपूर का नीराजन करे तथा सामर्थ्य रहने पर

मुकुट आदि भूषण अर्पण करे और छत्र चमर अर्पण करें प्रसन्न मुख श्याम सुंदर शरीर धारी प्रभु का ध्यान करके स्तोत्र आदि से जप करे। शंख चांदी की बनी हुई माला तथा सुवर्ण की माला या कमल के सुंदर मूंगे की मोती तथा मणि की इंद्राक्ष की माला से जप करे चलता हुआ हंसता हुआ इधर उधर देखता हुआ पैर पर पैर रखकर शिर पर हाथ रखकर खड़ा होकर तथा अशांत मन से विद्वान् कभी जप न करे जप व्रत होम पूजन आदि में मौन (चुपचाप) रह गृह में जप का एक गुणा गोशाला में दश गुणा नदी के किनारे पर सौ गुणा अग्नि होत्रशाला में हजार गुणा और तीर्थ आदि में जप करने से हजार गुणा फल होता है तथा मेरे सामने जप करने में अंनत फल होता है जो मनुष्य मार्ग शीर्ष में इस प्रकार जपादि करके प्रदक्षिणा करता है उसको पद पद पर सप्त द्वीपों सहित पृथ्वी के दान का फल प्राप्त होता है मेरे सहस्त्र नाम अथवा केवल एक नाम को

पढ़ता हुआ प्रदक्षिणा करता है, उसके महा-पाप भी नाश हो जाते हैं, और सप्तद्वीप सहित पृथ्वी की प्रदक्षिणा का फल प्राप्त होता है। मेरी तीन बार प्रदक्षिणा करने से सात दिन के पापों का नाश हो जाता है और दश दिन के दैहिक पापों का नाश उसी समय हो जाता है। जो भक्ति से इक्कीस बार प्रदक्षिणा करता है उसके भ्रुण-हत्यादि पापों का उसी समय नाश हो जाता है। जो १०८ प्रदक्षिणा करता है वह दक्षिणा सहित समस्त यज्ञों का फल प्राप्त कर लेता है, और इतनी ही बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा के फल का भागी हो जाता है। माता की प्रदक्षिणा, पृथ्वी की प्रद-क्षिणा, और शालिग्राम की प्रदक्षिणा ये तीनों समान फल देने वाली होती हैं। मार्गशीर्ष मास में एक दण्डवत् प्रणाम और सात प्रदक्षिणा बराबर नहीं है किंतु प्रदक्षिणा से दण्डवत् प्रणाम श्रेष्ठ कहा गया है। जो प्राणी प्रदक्षिणा के साथ साथ मुझको दण्डवत् प्रणाम करता है, विशेषकर मार्गशीर्ष मास

में वह कल्प वर्ष तक स्वर्ग का वास करता है, और कल्प के पश्चात् वह चक्रवर्ती राजा होता है। चिरायुः, धनवान्, सुख भोगने वाला, दानवान् और धर्मात्मा होता है, तथा सहस्र नाम के पाठसे काया वाणी और मन, तीनों प्रकार से किये गये पापों का नाश करता है। अब अधिक कहने से क्या मैं तुमको अत्यन्त गुप्त बात कहता हूँ कि मुझको दामोदर नाम से अति प्रीति है, क्योंकि जिस समय गोकुल में मेरी माता यशोदा ने दधि के पात्र के फोड़ने से मुझको ऊखल के साथ रस्सी से मजबूती से बांधा था, उसी समय से मेरा यह नाम प्रसिद्ध हुआ। जो मनुष्य प्रतिदिन पवित्र तथा एकाग्र-चित्त से 'नमो दामोदराय' इस मंत्र का सूर्योदय होने पर तीन हज़ार जप करता है और साढ़े तीन हजार जप करता है और साढ़े तीन लाख जप पूरा करके उसका उद्यापन, तद्दशांश तर्पण, तद्दशांश मार्जन और तद्दशांश ब्राह्मण भोजन करावे। जो इस विधि से इस मंत्र का जप

करता है मैं उसको मन वांछित धन धान्य स्त्री पुत्र और भी जो वस्तु अभीष्ट हो देता हूं यह मंत्रों का राजा है मैंने तुमसे मन कर्म वचन से सत्य कहा है तुम मेरे वचनों का विश्वास करो। हे पुत्र ! 'दामोदरायनमः' इस मंत्र राज को पढ़ता हुआ अष्टांग सहित मुझको प्रणाम करे दोनों हाथ दोनों पैर दोनों घुटने छाती शिर और मन इनको साष्टांग कहते हैं, मेरे दोनों चरणों पर परस्पर दोनों हाथ और शिर रख कर अर्थात् दाहिने हाथ से बांया और वायें हाथ से दाहिना चरण स्पर्श करता हुआ अपने शिर को मेरे चरणों में रखे और कहे कि भगवन् संसार सागर के मृत्यु रुपी ग्राह से भय-भीत होकर आप के शरणागत हूं। आप मेरी रक्षा करें। फिर मुझसे प्राप्त आशीर्वाद को ग्रहण करके मंत्र हीनं' यह मंत्र पढे। अर्थात् मंत्र होन क्रिया हीन होकर मैंने आपका पह पूजन किया है। यह पूर्ण फल दायक हो मार्ग शीर्ष मास में मृदंग बजाकर प्रणाय का गान करता हुआ मेरे सामने

नृत्य करने से अंनत फल को प्राप्त होता है। हे पुत्र! गीत वाद्य नृत्य और पाठ यह मुझको सर्वदा अति प्रिय हैं। हे पुत्र! गीत वाद्य और नृत्य के अभाव में मेरे सहस्त्र नाम स्तव राज गजेन्द्रमोक्ष मनुस्मृति और श्री मद्भागवत गीता ये पांच स्तोत्र मुझको अत्यन्त प्रीति करते हैं जो शालिग्राम के चरणों तक का पान करता है उसको हजारों वार पंचगव्य पीने की क्या आवश्यकता है। जो शालिग्राम शिला एक बूंद् जल भी पान करता है वह मनुष्य मुक्ति का भागी होकर माता के गर्भ में फिर जन्म प्रवेश नहीं करता है जो शालिग्राम शिला के जल का पान करते हैं और अपने सिर पर इस को चढ़ाते हैं उनको जन्म शौच अथवा मरण शौच का अशोच नहीं लगता मरण समय में जिसको यह दिया जाता है वह पापी होकर भी अच्छी गति को प्राप्त होता है। जो अपेय (मद्यादि न पीने योग्य चीजों) का पान करता है अथवा मांसादि भक्षण करता है तथा पर स्त्री गमन वाले पापात्मा

मनुष्य जो हैं वह भी शालिग्राम शिला के जल को धारण करने से शीघ्र ही पवित्र हो जाते हैं। क्योंकि शालिग्राम का जल चन्द्रायण तथा पाद-कृच्छ्र व्रत से भी अधिक श्रेष्ठ है। मेरे चरण जल से मिला हुआ अगर, कुंकुम, कपूर और चन्दन पवित्र को भी पवित्र करने वाला है। हे विप्र श्रेष्ठ मेरी दृष्टि से देखा गया जल ही मनुष्यों के पापों का नाश करने वाला है और यदि मेरे चरणों का जल हो तो फिर तो कहना ही क्या है तुम मेरे अति-प्रिय और ज्येष्ठ पुत्र हो इसीलिये विशेष प्रिय होने के कारण मैंने अपना रहस्य तुमको बतलाया है।

इति श्री स्कन्दपुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा पूजाविधि तथा उद्यापन फल दसवां अध्याय समाप्त हुआ

## ग्यारहवां अध्याय

ब्रह्माजी कहने लगे कि भगवन् ! एकादशी का माहात्म्य और मूर्तियों का विधान मुझसे कहिये। श्री भगवान् कहने लगे कि हे विप्र शार्दुल ! मैं एक पाप नाशिनी कथा कहता हूं, जिसके सुनने मात्र से ब्रह्महत्यादि महा पाप भी नाश को प्राप्त हो जाते हैं।

प्राचीन समय में काम्पिल्य नगर में वीरबाहु नामक राजा राज्य करता था। वह राजा सत्यवादी जित क्रोधी, ब्रह्मवेत्ता और मेरी सेवा में सदैव तत्पर रहता था। यह उत्तम भाववाला, दयावान् रुपवान्, बलवान्, भगवद्भक्तों का भक्त, व मेरी कथा में सदा प्रेम रखता था। कथा में लीन रहने वाला, रात्री को जागरण करने वाला, विद्वान्, दाता क्षमाशील, पराक्रम वाला, जितेन्द्रिय, रण में

विजय पाने वाला, ऋद्धि में कुवेर के समान, पुत्र-वान् अनेक पशुओं को पालन करने वाला, और अपनी स्त्री के ही प्रेम में रत करने वाला था। उसकी स्त्री का नाम कांतिमती था, वह रूप में अद्वितीय, पतिव्रता, महासाध्वी और मेरी भक्ति में सदा रत रहती थी, वह विशाल नेत्र वाला युवा राजा अपनी स्त्री के साथ पृथिवी का पालन करता था, मेरे सिवाय और किसी देवता को नहीं जानता था।

हे पुत्र! एक दिन उस महात्मा वीरबाहु राजा के घर महामुनि भारद्वाज आये। राजा ने मुनि को दूर से आते हुये देख कर उनका स्वागत किया और विधिवत् उनको अर्घ्य आदि अर्पण किया और अपने हाथ से आसन बिछाकर उनको बिठाया और परम भक्ति से मुनि श्रेष्ठ के सामने बैठ गया, राजा कहने लगा कि आज मेरा जन्म सफल हुआ राज्य का होना और मेरा गृह भी सफल हुआ

हे विप्रर्षि भगवन्! मेरे पर प्रसन्न हैं जो कि आप योगी श्रेष्ठ मेरे घर आये, आज आपकी दृष्टि पड़ने से मेरे करोड़ों पाप नाश हो गये। मेरा राज्य, लक्ष्मी, हाथी, घोड़ा ये सब आपके अर्पण हैं। हे मुनि श्रेष्ठ आप वैष्णव हैं आपके लिये मेरे पास कोई वस्तु भी अदेय नहीं है क्योंकि वैष्णव को एक कौड़ी भी दी हुई मेरु पर्वत के समान फल देने वाली होती है, जिसके घर में जिस दिन द्विज श्रेष्ठ वैष्णव नहीं आते हैं उसका वह दिन निष्फल चला जाता है ऐसा मैंने सुना है। गार्ग्य गौत्तम सुमन्तु जैसे विष्णु भक्त तथा जो द्विजाति के ब्राह्मण हैं सभी ने मुझसे ऐसा कहाहै। जो भगवान् के भक्त नहीं हैं वह पिशाच के समान है, तथा जो मनुष्य हरिदिन (एकादशी) को भोजन करते हैं। वे महापातकी हैं। हजारशिव व्रत, और कोटि सूर्य व्रत तथा ब्रह्मा के व्रत से कवियों ने जो फल कहा है वह हरिवासर (एकादशी) के एक व्रत से ही

जाता है। हे विप्रेन्द्र ! जब तक मेरी द्वादशी (एकादशी) तिथि नहीं आती तभी तक ब्राह्मी और शांकरी तिथि गर्व करती है। हे विप्रेन्द्र ! जैसे जब तक चन्द्रोदय नहीं होता तभी तक तारागणों का प्रकाश रहता है, उसी तरह और तिथियों का तभी तक प्रभाव रहता है जब तक मेरी द्वादशी (एकादशी) तिथि नहीं आती है। हे महामुनि ! यही बात मुझसे नारदजी ने और वशिष्ठ मुनि ने कही है, आप भी समस्त वैष्णव धर्म के ज्ञाता हैं भारद्वाज कहने लगे कि, हे राजन् ! आपने बहुत सुन्दर प्रश्न किया है, क्योंकि आप वैष्णव भक्त हैं। वह प्रजा और पृथिवी धन्य है जिसकी तुम रक्षा करते हो। वन में तथा तीर्थ में जाकर वास करना अच्छा है, परन्तु जिस देश का राजा वैष्णव न हो उस देश में नहीं रहना चाहिए। जिस पृथ्वी को भगवद्भक्त राजा पालन करता है, उस राष्ट्र को पाप रहित और बैकुंठ के तुल्य मानना

चाहिए जैसे नेत्रहीन देह, पतिहीन स्त्रियां दशमी विद्धा एकादशी, व्यर्थ कही गई हैं, वैसे ही वैष्णव रहित राष्ट्र भी व्यर्थ है, माता पिता का पालन पोषण न करने वाला पुत्र और दशमी युक्त द्वादशी व्यर्थ है वैसे ही वैष्णव राजा से रहित राष्ट्र व्यर्थ है, जैसे दान रहित राजा, रस बेचने वाला ब्राह्मण, दशमी, एकादशी व्यर्थ है। जैसे दांत हीन हाथी पक्ष हीन पक्षी और दशमी विद्धा एकादशी व्यर्थ है वैसे ही वैष्णव हीन एकादशी व्यर्थ है। जैसे दान के लिये वेद का पढ़ना द्रव्य के लिये पुण्य कर्मों का करना, कुशा रहित संध्या, दक्षिणा रहित श्राद्ध, शिखाधारी और कपिला गौ के दूध पीने वाला शुद्र, ब्राह्मणीगामी शुद्र, सुवर्ण की चोरी करने वाला जैसे हरि वृक्ष, सूर्य वृक्ष आदि को काटने वाला, मंत्र रहित आहुति, मृतवछड़े की गौ का दूध, केशों को धारण करने वाली विधवा स्त्री, स्नान रहित व्रत, दशमी

एकादशी दूषित हैं, वैसे बिना वैष्णव राजा के राज्य भी दूषित है। जो राजा मधुसूदन भगवान् का भक्त है, उसी को श्रेष्ठ लोग राजा कहते हैं उसी का राज्य नित्य बढ़ता रहता है और प्रजा के साथ वह स्वयं भी सुखी रहता है। हे राजन्! आज आपने मुझे देखा अतः मेरी दृष्टि सफल हो गई। आज मेरी वाणी आपके साथ भाषण करने से सफल हो गई। जहां वैष्णव लोगों का रहना हो वहां दूर रहने पर भी जाना चाहिये क्योंकि उन वैष्णवों के दर्शन करने से तीर्थ स्नान का पुण्य प्राप्त होता है। हे राजन्! आज मैंने विष्णु भक्ति में रत, पवित्र सदाचारी आपको देखा है। सो हे राजन्! आपका कल्याण हो, आप सुखी हों। इसी समय रानी कांतिमती ने आकर मुनि श्रेष्ठ भारद्वाज को नमस्कार किया। भारद्वाज मुनि ने आशीर्वाद दिया कि वरारोहे तुम सौभाग्य वती हो और अपने पति की भक्तिन हो और केशव

भगवान में तुम्हारी निश्चल भक्ति हो। इसके पश्चात् राजा वीरवाहु मुनि को प्रसन्न करता हुआ मेघ के समान गम्भीर वचन कहने लगा, कि मुनि श्रेष्ठ! मैंने पहले जन्म में कौनसा ऐसा अच्छा कर्म किया? यह शत्रु रहित राज्य कैसे मिला, विपुल लक्ष्मी कैसे प्राप्त हुई, गुणवान श्रेष्ठ पुत्र और सुन्दर मनोहर प्रिया स्त्री कैसे मिली? जोकि मुझमें चित्त लगाने वाली, और मुझमें प्राण रखने वाली जनार्दन भगवान का ध्यान करने वाली है। मैं कौन हूँ? और यह मेरी स्त्री कैसे हुई। मैंने ऐसा कौन-सा दुर्लभ धर्म का कार्य किया, तथा किस पुण्य के प्रभाव से अनन्त लक्ष्मी मुझको प्राप्त हुई? समस्त देशों के राजा मेरे वश में हैं। मेरा पराक्रम और आरोग्यता कभी नष्ट होने वाली प्रतीत नहीं होती। मेरा विपुल तेज कोई नहीं सह सकता, मेरी स्त्री दोष रहित है। इसकी मैं प्रतिज्ञा करके कह सकता

हूं। मैंने ऐसा कौन-सा पुण्य का कर्म किया था ? इस प्रकार राजा वीरबाहु ने मुनि भारद्वाज से प्रश्न किया, और अपना तथा अपनी स्त्री के पूर्व जन्म के कर्मों को जिससे उसको अतुल लक्ष्मी प्राप्त हुई पूछा। भारद्वाज मुनि कुछ काल में योगबल द्वारा उनके पूर्व-जन्मों के उपार्जित कर्मों का निश्चय करके राजा से कहने लगा कि हे राजन् ! मुझको योगबल द्वारा तुम्हारे और तुम्हारी स्त्री के पूर्वजन्म में उपार्जित कर्मों का ज्ञान हो गया है तुम एकाग्र चित्त से सुनो, पूर्वजन्म में तुम शूद्र जाति में जन्मे थे और तुम सदैव जीव हिंसा में रत रहते थे, नास्तिक, दुष्ट, चरित्र, पर-स्त्रीगामी, कृतघ्न, सदाचार से रहित थे, और आपकी यह स्त्री पूर्वजन्म में भी आपकी ही स्त्री थी, इस विशाल नेत्र वाली को मन-वचन, और कर्म से आप के सिवाय और कोई दूसरा प्रिय नहीं था, यह पतिव्रता निरन्तर आपकी सेवा किया

करती थी, आपके विषय में इसने कभी दुष्ट-भाव नहीं किया, इस प्रकार समय व्यतीत होने पर आपके मित्रों और भाई-बन्धुओं सब ने आपको त्याग कर दिया और आपके पूर्वजों का संचित किया, सब धन भी नष्ट हो गया, तो आपने खेती-बाड़ी का काम आरम्भ किया परन्तु पूर्वजन्म के कर्म फल से सब खेती-बाड़ी भी खतम होगई सब धन के नष्ट हो जाने और भाई-बन्धुओं से त्यागे जाने पर इस अत्यन्त क्षीण अवस्था में भी इस पतिव्रता ने आपको नहीं त्यागा। तुम सब कर्मों से गिरकर निर्जन वन में चले गए और वहां पर जीवों को वध करके आत्म-रक्षा करने लगे। इस प्रकार अपनी स्त्री के साथ तुम्हारे पापवृत्ति करते हुए कई वर्ष बीत गए। एक समय दिशा-विदिशा को भूलकर एक देवशर्मा नाम वाला श्रेष्ठ ब्राह्मण वहां आ निकला, भूख और प्यास से दुखित होकर मध्यान्ह के समय वह ब्राह्मण उस वन में

गिर गया। उस दुःखी वृद्ध ब्राह्मण को देखकर आपके मन में दया आई और अज्ञातवश, पृथ्वी पर गिर हुए उस ब्राह्मण का हाथ पकड़कर आपने कहा कि हे विप्र कृपा करके आप मेरे आश्रम को आइए। यह मनोहर फल पुष्पों से युक्त वृक्षों वाला अश्रम और कमलिनी खंड से शोभित जल से पूर्ण सरोवर है। हे ब्राह्मण ! शीतल जल में स्नान कर नित्य-नियम करके फलाहार करें। शीतल जल का पान करें। हे द्विजश्रेष्ठ उठिये आप मुझ पर कृपा करने योग्य हैं और जीवनपर्यंत मेरे आश्रम में रहें ! इस प्रकार होश आने पर तुम्हारे शूद्र के बचनों को सुनकर तुम्हारा हाथ पकड़ कर वह ब्राह्मण जलाशय के पास गया और उस सरोवर के किनारे छाया में बैठ गया। विधी पूर्वक स्नान आदि करके भगवान् का पूजन तथा देवता और पितरों का तर्पण किया और सुन्दर शीतल जल पिया। उस वृक्ष के मूल भाग में बैठकर उस देव शर्मा ब्राह्मण

ने विश्राम किया, इसके पश्चात् स्त्री सहित उस शूद्र ने परम भक्ति से मुनि को साष्टांग प्रणाम किया, और उनके समीप बैठकर कहने लगा कि हे विप्रर्षि ! हम दोनों स्त्री पुरुषों के उद्धार के लिये अतिथि रूप से आपका आगमन हुआ। आपके दर्शन मात्र से मेरे पापों का नाश हो गया, फिर अपनी स्त्रीसे कहने लगा कि हे प्रिय ! इनके लिये सुन्दर स्वादिष्ट, कोमल रस युक्त, परिपक्क प्रिय फल लाओ तब उस ब्राह्मण ने शूद्र से कहा कि हे पुत्र ! मैं तुमको नहीं जानता हूं' इस लिये तुम अपनी जाति बतलाओ क्योंकि ब्राह्मण को चाहिये कि अज्ञात का भोजन न करे। शूद्र कहने लगा कि हे ब्राह्मण मैं शूद्र हूँ आप संदेह न करें। मैं दुर्जन आत्मज (पुत्र) और भाई-बन्धुओं से परित्याग किया गया हूँ। इस प्रकार दोनों के बीच बात जारी रही तभी शूद्र की स्त्री ने फल लाकर ब्राह्मण को दिये। ब्राह्मण ने उन फलों को रख लिया, सुन्दर शीतल जल पीकर विप्र प्रसन्न हो

गया वृक्ष के मूल भाग में बैठने से उसकी सब थकान दूर हो गई। शूद्र स्त्री सहित भोजन करके उनके पास आकर कहने लगा कि हे विप्र! आपका स्वागत हो! यहां आपका आना कैसे हुआ? यह शून्य बन दुष्ट जीवों से व्याप्त, मनुष्य रहित, दुःख युक्त रात दिन भयानक है। ब्राह्मण कहने लगा कि हे महाभाग! मैं ब्राह्मण हूँ। प्रयाग को जा रहा था। मार्ग का ज्ञान न होने से इस दारुण वन में आ निकला। मेरे पुण्य के प्रभाव से तुम जैसा श्रेष्ठ बन्धु मुझे मिला। तुमने मुझको जीवन दान दिया, कहिये मैं आपका क्या उपकार करूं। इस निर्जन वन में आपका आना कहां से हुआ? आप कौन हैं? और यहां आने का कारण मुझ से कहिये! शूद्र कहने लगा कि हे विप्रेन्द्र! राजा भीमसेन की एक सुरक्षित विदर्भ नाम नगरी है। उस महाराष्ट्र देश में मेरा वास है। मैं जाति का शूद्र और महापापी हूँ। मैने अपने धर्म को त्याग दिया। सबसे त्यागा जाकर मैं इस बन में चला आया।

नित्य ही जीवों का वध करके अपनी स्त्री सहित जीवन निर्वाह करता रहा मैं इस समय में पापों से अत्यंत विरक्त हो गया हूँ। मेरे पुण्य प्रभाव से आप यहां आ गये हैं। आप मुझे अपने उपदेश से कृतार्थ करें। आपके उपदेश से स्त्री सहित यम-राज को न देख सकूं। जनार्दन भगवान के सिवाय मैं और कुछ नहीं चाहता। आप मुझ पर कृपा करें। भारद्वाज ऋषि ने राजा वीरवाहु से कहा कि हे राजन् इस प्रकार शूद्र ने परम भक्ति से ब्राह्मण से कहा। देवशर्मा हंसते हुए शूद्र से यह बचन बोले

इति श्री स्कन्दपुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा एकादशी महात्म्य वर्णन ग्यारहवां अध्याय समाप्त हुआ

---

## बारहवाँ अध्याय

देवशर्मा ब्राह्मण कहने लगे कि हे वत्स ! सहसा भगवान् में तुम्हारी ऐसी बुद्धि हो जाने के कारण तुम्हारे सैकड़ों जन्म के पाप नाश हो गये। तुम बिना किसी व्रत या तीर्थ के ही करोड़ों पापों से मुक्त हो गये हो, मेरे आतिथ्य सत्कार तथा भक्ति के कारण तुमको विष्णु पद प्राप्त हुआ। उसी पुण्य प्रभाव से तुम्हारी ऐसी बुद्धि हो गई है ! मैंने योग द्वारा तुम्हारे पूर्व जन्म के कर्मों को जान लिया है। हे वत्स ! तुम पूर्व जन्म में अवन्ती नगरी के रहने वाले ब्राह्मण थे। धर्म में परायण, सदा अध्ययनशील, सुशील और सदा व्रत करने वाले परन्तु तुमने विष्णु भगवान् का एक दशमी विद्या एकादशी का व्रत कर लिया

इसी से तुम्हारे समस्त पुण्य नष्ट हो गये, जैसे शुद्रा का पति होकर ब्राह्मण नष्ट हो जाता है वैसे ही तुम्हारे सब पुण्य नष्ट हो गये। कई हजार वर्ष तक तुमको नरक यातना भोगनी पड़ी, इसी पाप से जो तुमको दशमी विद्ा व्रत के करने से हुआ शूद्र हुए और पाप में वृद्धि हो गई तथा धर्म में चित नहीं लगता था। विदर्भ नगर में तुम्हारी लड़की का लड़का रहता है, उसने विधि पूर्वक एकादशी का व्रत किया और अखंड एकादशी के व्रत का पुण्य उसने तुमको दिया। इसी से तुम्हारी बुद्धि धर्म में हो गई और पापों का नाश हो गया। उस एकादशी के पुण्य प्रभाव से यमराज ने दशमी विद्ध एकादशी के पाप को और दश हजार पूर्व जन्मों के पापों को मिटा दिया है। इस प्रकार वह शूद्र और देवशर्मा ब्राह्मण दोनों बात चीत कर ही रहे थे कि स्वयं भगवान् वहाँ पर आकर उपस्थित हो गये और कहने लगे कि हे

वर्णावर (शूद्र)! तुम्हारा स्वागत हो, मैं तुम पर अति प्रसन्न हूं। तुमने ब्राह्मण का आतिथ्य सत्कार किया। इससे तुम्हारे सब पाप नाश हो गये। तुम्हारे दोहित्र (नाती) से किये गये एकादशी के व्रत के प्रभाव से दशमी विद्धा पाप नाश हो गया। और उस पुण्य के द्वारा तुम्हारा उद्धार हो गया। तुम अपनी पत्नी सहित गरुड़ पर सवार हो जाओ ऐसा कह कर देवाधिदेव भगवान् विष्णु ने उनको अपने विमान पर बिठाया और हे राजन्? शूद्र शरीर से तुम स्वर्ग को गये और देव शर्मा ब्राह्मण तीर्थ राज प्रयाग को गये। सो हे राजन्। जो कुछ तुमने पूछा था उसका उत्तर मैंने दिया। अखंड एकादशी के व्रत के पुण्य से तथा अतिथि सत्कार से तुमको भगवान् की भक्त और पतिव्रता स्त्री मिली और निष्कंटक राज्य भी मिला।

यह कथा सुनकर राजा वीरबाहु बोले कि हे ब्रह्मन्! विष्णु भगवान् को प्रसन्न करने वाली अखंड एकादशी के व्रत की विधि अच्छी तरह से कहिये। ऋषि कहने लगे कि हे नृप श्रेष्ठ! पवित्र

एकादशी के व्रत की विधि जो पहले भगवान् विष्णु ने नारद जी से कही थी मैं तुमसे कहता हूँ आप सुनिये, सुन्दर उद्यापन विधि भी कहूंगा मार्ग शीर्ष आदि मासों में एकादशी के दिन, इस पवित्र अखंड एकादशी का व्रत करना चाहिये, दशमी के दिन शाम को सूर्यास्त के पूर्व भोजन करना चाहिये। एकादशी के दिन उपवास करना चाहिये, तथा द्वादशी को एक बार भोजन करना चाहिये। इसको अखंड एकादशी व्रत कहते हैं। सूर्य नारायण के मंद प्रकाश होने पर (शाम) उसको नक्त भोजन कहते हैं, परन्तु रात्री का भोजन करने पर नक्त भोजन नहीं कहते, कांसे के पात्र मेंभोजन, मांस का भोजन, मसूर, चना, कद्दू ,शाक, मधु, दूसरे का अन्न, दो बार भोजन, मैथुन, इन दश कर्मों को विष्णु भक्त दशमी को कभी ना करे, हे राजन् ! यह दशमी की विधि है। अब एकादशी की विधि सुनिये, अनेक बार जल पीना, हिंसा, अशौच, मिथ्या पान लकड़ी का दातुन, दिन में सोना मैथुन, जुआ

खेलना, क्रीड़ा (खेलकूद) रात्री में सोना, पतितों (बुरे मनुष्यों) से भाषण यह ग्यारह कर्म एकादशी के दिन विष्णु भक्त कदापि न करे, और भगवान् से यह प्रार्थना करे कि हे केशव ! आपकी प्रसन्नता के लिये मैंने आज रात्रि तथा दिन के लिये यह नियम किया है। हे देवेश आज मेरे लिये स्त्री सुख और भोजन सुख नहीं होगा, इन दोनों का मैंने परित्याग किया है, परन्तु हे परुषोत्तम ! यदि स्वप्नावस्था में विकलता में भोजन या मैथुन हो जाय, या दंतों में उच्छिष्ट अन्न लगा रह जाय तो उसको क्षमा करना। अब उपवास का लक्षण कहते हैं, पाप कर्मों से विवृत्त होकर जो दया दाक्षिण्यादि गुणों के साथ बुद्धिकृत वास है उसी को उपवास कहते हैं,कि उपवास शरीर का शोषण करने को उपवास कहते हैं विष्णु भक्त पूर्वोक्त दश काम मधु (शहद या (मद्य) तथा शरीर का मर्दन आदि द्वादशी को त्याग दे और यह कहे कि हे गरुड़ ध्वज ! आज मुझे पाप नाशिनी पवित्रा

द्वादशी प्राप्त हुई है। अतः आज मैं पारण करूंगा। आप प्रसन्न हों इसके पश्चात् ब्राह्मण से कहे कि हे द्विजोत्तम मैंने विष्णु भगवान् की प्रसन्नता के लिये एकादशी का नियम लिया है और आज आपकी कृपा से भोजन करूंगा। इस विधि से एक वर्ष पर्यन्त व्रत करे। वर्ष के पूर्ण हो जाने पर बुद्धिमान् उसका उद्यापन करे, आदि मध्य तथा अंत में उद्यापन करे जो उद्यापन नहीं करता है वह कुष्टी और अंधा होता है अतः अपनी शक्ति के अनुसार उद्यापन अवश्य करना चाहिये। वह उद्यापन पवित्र मार्ग शीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में करे विधि को जानने वाले बारह ब्राह्मणों को और तेरहवें अच्छे विद्वान् स्त्री सहित आचार्य को बुलाकर यजमान शौचादि स्नान कर श्रद्धा से जितेन्द्रिय होकर, पाद्य, अर्घ्य वस्त्रादि से आचार्य का पूजनकरे, इसके पश्चात् आचार्य पंचरंगों से सुन्दर सर्वतो भद्र चक्र कमल बनाकर, सफेद वस्त्र से वेष्टित कर और पंचरत्न डालकर घट को जल से पूर्ण करे, तथा पंचपल्लवों

से युक्त कर कपूर, अगरू से सुगन्धित करे। घट पर ताम्बे का पूर्ण पात्र रख कर लाल कपड़ा और पुष्पमाला उसके चारों तरफ लपेट सर्वतोभद्र मंडल के ऊपर स्थापित करे। उस घट के ऊपर भगवान् लक्ष्मीनारायण की प्रतिमा स्थापित करे। प्रतिमा १६ मासे सोने की बनावे, वाहन तथा शस्त्र से युक्त तथा चार अंगुल प्रमाण की होनी चाहिये, अथवा जैसी शक्ति हो वैसी लेवे, परन्तु धन रहने पर कंजूसी न करे। मूर्ति स्थापित कर मंडल में १२ मासों के देवताओं की स्थापना करे। और अखण्ड एकादशी व्रत के निमित्त उनके स्वामियों की पूजन करे, मंडल के पूर्व दिशा में सुन्दर शंख की स्थापना करे और कहे कि हे पांच जन्य प्रथम आप समुद्र में उत्पन्न हुये फिर विष्णु भगवान् ने आपको अपने हाथ में धारण किया, तथा समस्त देवताओं ने आपका निर्माण किया, हे पांच जन्य, आपको नमस्कार है, मंडल के उत्तर की तरफ वेदी बनावे और संकल्प करके वेदोक्त विष्णु

मंत्रों से हवन करे, अपने स्थान में विष्णु की और हरि की स्थापना करे और पुरुष सूक्त और पौराणिक मंत्रों से पूजन करे। फिर प्रदक्षिणा करे। स्वस्तिवाचन तथा नमस्कार पूर्वक क्रम से आचार्यादि ब्राह्मण जप करें। पवमान सूक्त का पाठ करें। मंडल ब्राह्मण का तथा मधु मंत्रों का पाठ करें, ऋचंवाचं, ब्रह्म साममंत्र पवित्र सूर्य के मंत्र और विष्णु भगवान् की संहिता का पाठ करे, जप के बाद कलश के ऊपर सांगोपांग विष्णु प्रतिमा स्थापित करे, दूसरे दिन सूर्योदय के होने पर क्रम से हवन करे, प्रथम प्रोक्षणी पात्र, प्रणीता पात्र आदि स्थापन करे। विधिवत् पूजन कर स्तुति करे। चरु आदि का हवन करे, गृह्य सूत्र के विधान से यज्ञ की अग्नि क्रिया आदि को करे। तथा दो चरु बनाए, जिसमें विष्णु के निमित्त एक पायस (खीर) की चरु बनावे। उस खीर की पुरुष सूक्त की १६ आहुतियां देवे, और घृत युक्त चार

आहुतियां देवे घृत में भिगोकर 'इदं विष्णु' इस मंत्र से आदेश मात्र (अंगूठा से तर्जनी पर्यन्त) पलाश की समिधा से कर्म सिद्धि के निमित्त हवन करे। १०१ समिधा की आहुति देकर २०२ तिल की आहुति देवे, इस प्रकार वैष्णव यज्ञ के पश्चात् ग्रह यज्ञ आरम्भ करे, समिधा के होम चूरू और होम तिल क्रम से करे। दोनों हवनों में स्वस्ति-वाचन कर पूजा करे, इसके पश्चात् ऋत्विजों को धेनु आदि ग्रह दक्षिणा देवे। प्रधान देवता के प्रत्यिर्थ आचार्य को यथा विधि दक्षिणा देवे। दूध देने वाली गौ, तथा सुन्दर बैल का दान करे, १३ ब्राह्मणों को तेरह पदों का दान करे, सपत्नीक आचार्य को वस्त्रों से तथा महा दानों से प्रसन्न करे। प्रधान कलश आदि और समर्पण करे, २४ घट जल के भर वस्त्र सहित पारण के पश्चात् रात्रि में ब्राह्मणों को देवे, और भूयसी दक्षिणा ब्राह्मणों को देवे, और बन्धुओं तथा इष्ट मित्रों को भोजन करावे, आचार्य को दक्षिणा

सहित पूर्ण पात्र का दान करे, क्योंकि पूर्ण पात्र के दान से कार्य की पूर्ति होती है, उपवास, व्रत, स्नान तीर्थ यात्रा का फल भी इसी से होता है, यदि घर में धन नहीं हो और उद्यापन करने की सामर्थ्य नहीं है तो ब्राह्मणों के वचन से व्रत को पूर्ण करे, अर्थात् ब्राह्मणों से कहे कि मेरे पास उद्यापन के लिए धन नहीं हैं। मैंने एकादशी का व्रत किया है। इस का पूर्ण फल मुझको प्राप्त हो, ऐसा यजमान के कहने पर ब्राह्मण कहे कि तुमने जो एकादशी का व्रत किया है उसका पूर्ण फल तुमको मिले। इस प्रकार कहने से यजमान को पूर्ण फल मिल जाता है। अपनी शक्ति के अनुसार उद्यापन आदि कार्य को करे, भगवान् कहते हैं कि हे पुत्र मैंने यह सब अखंड एकादशी का व्रत तुमसे कहा।

इति श्री स्कन्द महा पुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथशर्मा कृत भाषा अखंड एकादशी व्रत कथन नाम वर्णन बारहवां अध्याय समाप्त हुआ ॥८॥

## तेरहवाँ अध्याय

भगवान् कहने लगे कि हे पुत्र ! सुनो मैं तुमसे जागरण का लक्षण कहता हूँ। कलियुग में जिसके विज्ञान मात्र से मनुष्य आसानी से मुझको प्राप्त होता है। गीत (गाना), वाद्य (बाजा). नृत्य (नाचना) पुराणों का पाठ' धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, चंदन, सुगंधित द्रव्य का लेपन, फलों का समर्पण करना, श्रद्धा, दान, इन्द्रियों का निग्रह, सत्यता, निद्रा-रहित, आनन्द पूर्वक मेरा पूजन करना, पूजन में उत्साह का होना, पाप रहित, आलस्य रहित प्रत्येक प्रहर में मेरी आरती करना इन सब बातों में लीन होकर जो मनुष्य एकादशी की रात्रि को जागरण करता है वह फिर पृथिवी पर जन्म नहीं लेता। जो इस प्रकार भक्ति से जागरण करता है

वह मुझ में लीन हो जाता है। जो प्राणी एकादशी की रात्रि को सो जाते हैं वे मानो काले रूप सर्प से डसे जाते हैं और वे माया रूपी पाश के बंधन में मोहित हो जाते हैं। जिन्होंने कलियुग में एकादशी के आने पर बिना जागरण के एकादशी को बिता देते हैं वह अवश्य नाश को प्राप्त हो जाते हैं क्योंकि यह जीवन अनित्य है जो दोनों नेत्रों को खोलकर अपने हृदय में मेरे चरणारविन्दों को स्थिर कर रात में जागरण को नहीं देखते हैं वे पातकी हैं। पुराणों की कथा आदि सुनें। यदि कथा कहने वाला पंडित न मिले तो मेरे सम्मुख गान नृत्य आदि करें। ऐसे जागरण करने से सैकड़ों हजारों और करोड़ों गुना फल मिलता है। मेरी एकादशी की रात्रि को जागरण करने से पितृपक्ष मातृपक्ष और स्त्रीपक्ष के कुलों का उद्धार होता है। उपवास के दिन अथवा जागरण के समय जो कोई विघ्न उपस्थित करता है मैं उस स्थान को छोड़कर तथा श्राप देकर

चला जाता हूँ जो मनुष्य मेरी अविद्रा एकादशी के दिन जागरण करते हैं मैं प्रसन्न होकर उनके बीच में नृत्य करता हूँ। जो मेरे समीप जितने दिन जागरण करता है वह उतने अयुत (दश हज़ार) तक युग पर्यंत मेरे गृह में आकर वास करता है। एकादशी के दिन जागरण नहीं करने से पूर्वजों की न गया श्रद्धा से, न तीर्थ सेवन से और न बहुत यज्ञों से मुक्ति होती है। अतः सब साधनों से जागरण श्रेष्ठ है जो एकादशी के जागरण के समय पुष्पों से मेरा पूजन करता है वह प्रत्येक पुष्प में अश्वमेघ यज्ञों का फल का भागी होता है। जो मेरे एकादशी के दिन जागरण के समय दीप दान करता है वह प्रत्येक क्षण के प्रकाश से दश हज़ार गौ दान का फल पाता है। जो मेरे जागरण दिन हविष्यान्न का नैवेद्य अर्पण करता है, वह धान को फुवाल के समान दान का पुण्य प्राप्त करता है। हे चतुर्मुखी जो अनेक प्रकार के पकवान तथा फलों को मेरे जागरण के दिन देता

है वह सौ गोदान के फल को प्राप्त होता है। जो मेरा भक्त जागरण के दिन कपूर के साथ पान मुझे अर्पण करता है वह मेरी कृपा से सातों द्वीपों का स्वामी होता है। जो मेरे जागरण के दिन पुष्पों से मंडप को सजाता है वह पुष्पों से से सजे हुए विमान में बैठ कर मेरे गृह में आकर आनन्द से वास करता है। जो मेरे जागरण के दिन कपूर और गुगगुल का धूप देता है, वह अपने लाख जन्म के पापों का नाश करता है। जो मेरे जागरण के दिन मुझको दूध दही घी और जल से स्नान कराता है वह इसलोक के सुखों को भोगकर अन्त में श्रेष्ठ गति को पाता है। जो सुंदर वस्त्रों और विविध प्रकार के फलों को मेरे लिये देता है वह वस्त्र के जितने सूत होते हैं उतने वर्षों तक चिरकाल तक स्वर्ग में वास करते हैं जो रत्नों से जड़ित सुवर्ण के गहने मुझे अर्पण करता है। वह सातकल्प तक मेरा प्रिय होकर मेरे पास वास करता है जो घी से विशेषकर गौ के घी से मेरे

जागरण की रात्रि को दीपक जलाता है, उसको एक २ दक्षिणा के बदले दश हजार गोदान का फल मिलता है। हे चतुरानन ! जो जागरण के दिन कपूर से नीराजन करता है वह कपिला गो-दान के फल का भागी होता है। जो पुनः दीप-दान, गान, नाच और पूजन करता है वह सैकड़ों यज्ञ, व्रत और दान के समान पुण्य को पाता है, जो जागरण के दिन मेरे सामने निर्लज्ज होकर गाना और नाच करता है वह आधे क्षण में कोटि यज्ञ के फल को पाता है, जो मेरे जागरण के दिन गाना, नाच आदि को रोकता है वह साठ हजार वर्ष रौरवादि नरक की यातना भोगता है, जो मेरे जागरण के दिन मेरे समीप नाच, गाना करते हुए मनुष्य के पास जाता है वह धर्मराज के बन्धन से मुक्त होकर, मुक्ति का भागी होकर मेरे पद को प्राप्त होता है। जो मेरे जागरण के दिन नाचने वाले मनुष्य का उपहास करता है, वह चौदह इंद्र के राज्य तक नरक में जाकर वास करता है। जो

मेरे जागरण के दिन भक्ति से पुस्तक पढ़ता है वह श्लोक संख्या के हिसाब से उतने ही युग पर्यंत मेरे लोक में वास करता है, विद्वानों ने जो फल दक्षिणा करने से कहा है, वह फल अनेक युगों में कोटि यज्ञों के करने से भी प्राप्त नहीं होता। हे पुत्र ! जो मेरे जागरण के दिन माला-कार दीपक जलाता है, वह कोटि विमान के साथ देवलोक में जाकर कल्प वर्ष पर्यंत वास करता है जो जागरण के समय मेरे बालचरित्रों को पढ़ता है वह सहस्र-कोटि युग पर्यंत श्वेत दीप में जाकर वास करता है। इसलिए दोनो पक्षों की एकादशी को जागरण करना चाहिए। जो जागरण के दिन गीता का तथा सहस्र नाम का पाठ करता है अथवा वेदोक्त मन्त्रों और पुराणों का पाठ करता है अथवा जो धेनुदान करता है, वह सातों द्वीप सहित पृथ्वी के दान के फल का भागी होता है, इस पृथ्वी के समस्त पुण्यों से महान् पुण्य के फल को देने वाला है। एकादशी के जागरण का

फल है, जो मनुष्य मन, कर्म और वचन से जागरण करते हैं उनका मेरे लोक से लौटकर फिर इस लोक में आना सम्भव नहीं है। जो एकादशी की रात्रि को दूसरों को प्रोत्साहित कर जागरण करता है वह चक्रवर्ती राजा होता है। यह मेरा कथन सत्य है। रात्रि में जागरण करने वालों का राजा ककुत्स्थ ने भी सम्मान किया है। जो अपनी शक्ति के समान दान देता है, वह अति दुर्लभ राज्य को पाता है। जो कोई गायक (गाने वाला) वाद्यक बाजा (बजाने वाला) नर्तक (नाचने वाला) और ब्राह्मण मेरें जागरण में आकर गायनादि करते हैं, उनमें नाचने वाली वेश्या ही क्यों न हो मेरे लोक में आते हैं। एकादशी के दिन जागरण करने से कामी पुरुष भी मुनि श्रेष्ठ की पदवी को प्राप्त हो गए हैं। मेरे एकादशी के दिन जागरण में जाति का कोई विवेकी नहीं है, इस कलियुग में एक जागरण को छोड़कर न तो ध्यान पवित्र है न गंगाजल पवित्र है न जप ही पवित्र है।

द्वादशी (एकादशी) के आने पर जो लोग जागरण करते हैं, वह इस कलिकाल में धन्य हैं, कृतार्थ हैं इसमें कोई संशय नहीं है। इस मनुष्य लोक में मनुष्य को एकादशी के विमुख कभी नहीं होना चाहिए, क्योंकि एकादशी से विमुख मनुष्य अपने से पूर्व के गोत और आगे होने वाले जीवों को नरक में गिराता है। गुणवान् एक पुत्र का होना ही अच्छा है परन्तु निर्गुण अनेक पुत्रों के होने से कोई लाभ नहीं। जो एकादशी के दिन जागरण करके अपने पूर्वजों का उद्धार करता है और जो मेरे कहे गए जागरण का भक्ति पूर्वक पाठ करता है, वह जागरण के महात्म्य से अपने सौ कुलों का उद्धार करता है। अगम्या स्त्री के साथ गमन करने तथा अभक्ष्य (ना खाने योग्य) वस्तु को खाने से जो पाप होता है, वो समस्त पाप एकादशी के जागरण से नास हो जाते हैं, जो अज्ञात वश पाप किया हो या ज्ञात पाप हो तथा जो पूर्व जन्म का अर्जित पाप हो, अथवा इस जन्म में

किया हुआ पाप हो, मनुष्य एकादशी के जागरण करने से उनसे रहित हो जाता है। हे चतुराजन्! मेरे एकादशी की रात्री को जागरण करने से उनसे रहित हो जाता है। हे चतुराजन्! मेरे एकादशी की रात्री को जागरण करने मात्र से मनुष्य मुक्ति का भागी हो जाता है। जों फल कलि में एकादशी के दिन जागरण से होता है, उस फल की प्राप्ति कुरुक्षेत्र और प्रयाग में वास करने वालों को भी नहीं होती! हे पुत्र! एकादशी के दिन जागरण करने से जिस फल की प्राप्ति होती है, उस फल की प्राप्ति हजारों अश्वमेध यज्ञ और कोटि तीर्थों में स्नान करने से भी नहीं होती। जो एकादशी के महात्म्य को पढ़ता है या सुनता है वह मनुष्य समस्त पापों से रहित होकर परमगति को पाता है। जिस मनुष्य के एकादशी के दिन व्रत, पूजन और जागरणादि होते हैं। उसके समस्त दुष्ट ग्रह सौम्य हो जाते हैं और संतान का वियोग नहीं

होता तथा, मेरी कीर्ति सुनने में नित्य प्रेमी होता है और वह प्रेमी कभी नष्ट नहीं होता, तथा रण में और राज कुल में सदैव विजयी होता है। हमेशा धर्म में बुद्धि और निश्छल भक्ति होती है, तथा एकादशी की भक्ति करने से मनुष्य पाप से कभी लिप्त होता ही नहीं, मेरे एकादशी के दिन जागरण करने से कभी मनुष्य प्रेत भाव को प्राप्त नहीं हो सकता। जो लोग एकादशी के व्रतादि से विमुख हैं उनको परलोक गति नहीं होती। इसलिए कलियुग में एकादशी का व्रतादि अवश्य करना चाहिये।

इति श्री स्कन्द महा पुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथशर्मा कृत भाषा एकादशी व्रत जागरण फल नाम वर्णन तेरहवां अध्याय समाप्त हुआ ॥८॥

## चौदहवां अध्याय

भगवान् हकनेलगे कि इस प्रकार मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में एकादशी का व्रत करके द्वादशी को दूसरे दिन विद्वानों को यथा विध उपचारों से मत्स्योत्सव करना चाहिये। मार्गशीर्ष मास की दशमी के दिन बुद्धिमान् नियम में स्थित होकर तथा विधि देवार्चन कर अग्नि कार्य करे। शुद्ध चित्त होकर प्रसन्नता से शुद्ध वस्त्र पहने। संस्कृत हव्य अन्न को पका कर पंच पद को जाय, वहां पर पैरों को धोकर, आठ अंगुल प्रमाण दूध वाले वृक्ष की दातुन करे। दातों और जिह्वा को शुद्ध करे और अच्छी तरह आचमन करे, तथा आकाश की तरफ देख कर मेरा ध्यान करे। जिसके हाथ में शंख, चक्र, और गदा धारण है। जो कोटि और

पीताम्बर धारी है। कमल के समान प्रसन्न मुख वाले, समस्त लक्षणों से युक्त है। इस प्रकार ध्यान कर हाथ में जल लेकर सूर्य नारायण के बिम्ब में ध्यान कर, उसी बिम्ब की तरफ हस्तां जली से अर्घ्य देवे और ऐसा कहे कि हे पुण्डरी काक्ष ! आज एकादशी में मैं निराहार रह कर कल भोजन करुंगा, आप मेरी रक्षा करें, इस प्रकार कह कर रात्री में मेरी मूर्ति के समीप बैठकर विधी वत् ओं नमो नारायण इस अष्टाक्षर मंत्र का स्वयं जप करे। बाद में द्वादशी के दिन समुद्र में जाने वाली नदी पर जाकर अथवा दूसरी नदी, तालाब या घर में ही नियमानुसार स्नान करे। प्रथम शुद्ध मृतिका को लेकर इस मंत्र से देव देवेश भगवान् विष्णु को प्रणाम करे, ता मनुष्य उसी समय शुद्ध हो जाता है। मंत्र यह है हे देव। समस्त प्राणियों का, आप ही से धारण पोषण होता है, हे सुव्रत्त ! उस सत्य बचन से मेरे सब पाप नाश करो, ब्रह्मांड में जितने तीर्थ हैं वे सम-

स्त देवताओं के हाथ से स्पर्श किये गये हैं। अतः आपसे स्पर्श की गई है। और उड़ाई गई इस मिट्टी को उडाता हूं। हे वरुण। आप रष में समस्त नित्य रूप से स्थित हैं। इस लिए इस मृतिका गीली करके पवित्र कीजिये, देर नहीं करें। इस प्रकार प्रार्थना करने के पश्चात् मिट्टी को ग्रहण करे, और उसके तीन पिंड बनाकर पृथ्वी पर रखदे। शेष मिट्टी को अपने शरीर पर लेपन करे। और उस जल में जिसमें सदैव मगर और कच्छप रहते हैं अच्छी तरह स्नान कर, आवश्यक कर्मों को करके मंदिर में जाय। हे महायोगिन! वहां जाकर नारायण हरिदेव की आराधना करे और ओं केशवाय नमः इस मंत्र से चरणों का ओं दामोदराय नमः इस मंत्र से कटिका ओं नरसिंहायनमः इस मंत्रसे हृदय का ओं कौस्तुभाय नमः इस मंत्र से कंठ का ओं श्री पतेय नमः इस मंत्र से वक्षस्थल का ओं जै लोक्या विजयायनमः इस मंत्र से बाहुः का ओ सवात्मनेनमः इस मंत्र से शिर का ओं रथांगधारणे

नमः इस मंत्र से मुख का ओं कराय नमः इस मंत्र से शंख का, ओं गभीराय नमः इस मंत्र से गदा का ओं शांत मूर्तये नमः इस मंत्र से कमल का पूजन करे, इस प्रकार भगवान् नारायण का पूजन करके, फिर भगवान के सामने चार घर स्थापन करे उन घटों को जल से भर कर फूलमाला पहनावे, सफेद चंदन लगावे, आम्रपल्लव से युक्त कर श्वेत चंदन से आच्छादित करे तथा सुवर्ण सहित तिल से पूर्ण ताम्र पात्रों को घटों के ऊपर रखे चारों घटों को चार समुद्र मान कर उन घटों के मध्य भाग में सवस्त्र सुन्दर पीठ स्थापित करे। उस पीठ पर सुवर्ण, चांदी ताम्र, अथवा कष्ठ का पात्र रक्खे। इन पात्रों के अभाव में पलाश पात्र स्थापित करे और उस पात्र में जल भर कर सुवर्ण के बने हुए मत्स्य रूप जनार्दन भगवान् को स्थापित करे तथा देवदेव मत्स्य भगवान् अंगो (पांवों)से युक्त करे और श्रुति (वेद) स्मृति से विभूषित करे करे अनेक प्रकार के भक्ष्य पदार्थों तथा फल पुष्पों

से शोभित करे। गंध, पुष्प, धूप, वस्त्रों से यथा-विधि पूजनकरे व कहे कि हे देव! जैसे रसातल में गये वेदों का आपने उद्धार किया (निकाला) इसी प्रकार मत्स्य रूप से मेरा भी इस भव सागर से उद्धार करें। इस प्रकार प्रार्थना करके भगवान् के सामने जागरण करे। अपनी श्रद्धानुसार प्रातः काल होने पर उन चार घटों को चार ब्राह्मणों को देवे, पूर्व दिशा में स्थापित घट को वह वृच शाखा ध्यायी को देवे, और दक्षिण स्थित कुंभ को छान्दोग्य शाखाध्यायी को देवे। तथा पश्चिम स्थित घट को यजुः शाखाध्यायी को देवे, और उत्तर स्थित घट को इच्छानुसार किसी भी ब्राह्मण को देवे। यह विधि कही गई है। पूर्व के घट से ऋग्वेद, वेद भगवान्, दक्षिण के घट से सामवेद पश्चिम घट के घट से यजुर्वेद भगवान् और उत्तर के घट से अथर्व वेद भगवान् प्रसन्न हों। इस क्रम से प्रत्येक के लिए प्रसन्न हों। स्वर्ण के मत्स्य रूप भगवान् को आचार्य के लिए अर्पण

करे और क्रम से गन्ध, धूप, वस्त्रादि से विधि पूर्वक पूजन करे। जो इस रहस्य सहित विधान के मंत्र पूर्वक करता है। और विधि के सहित दानादि देता है उसको कोटि गुणा फल मिलता है। जो गुरु को देना निश्चित करने के बाद मोह वश नहीं देता है वह मनुष्यों में अधम कोटि जन्म पर्यन्त नरक की यातना को भोगता है। जो इस विधान का उपदेश करता है विद्वानों ने उसी को गुरु कहा है। इस विधान से दानादि करे और द्वादशी को मेरा पूजन करे। अनेक प्रकार के उत्तम अन्न से ब्राह्मणों को भोजन करावे और अपनी शक्ति के अनुसार दक्षिणा देवे। इसके पश्चात् स्वयं जितेन्द्रिय और मौन होकर स्त्रियों के साथ भोजन करे। जो मनुष्य इस विधि से मत्स्य भगवान् का पूजन करता है तथा उत्सव मनाता है। उस मनुष्य के पुण्य के फल को मैं आगे कहूँगा आप सुनिये। यदि किसी के दश

लाख मुखों और ब्रह्मा के तुल्य आयु हो तो वह भी इस धर्म को कहने में असमर्थ हो सकता है। जो मनुष्य इस श्रेष्ठ द्वादशी कल्प को कहता है अथवा सुनता है वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

इति श्री स्कन्ध महा पुराणे मार्गशीर्षमास महात्म्य
ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा
मत्स्योत्सव कथा नाम चौदहवां अध्याय
समाप्त हुआ ।।१४

## पंद्रहवाँ अध्याय

भगवान् कहने लगे कि हे ब्रह्मा। आपके प्रश्नों का उत्तर मैं क्रम से देता हूं आप सावधान होकर सुनिये ! मार्ग शीर्ष मास में भगवान् कीर्ति नामक स्त्री के साथ वास करते हैं, इसलिये जैसा

कि पहले कहा गया है केशव (विष्णु) का पूजन कीर्ती के साथ करना चाहिये। ब्राह्मण के केशव और ब्राह्मणी को कीर्ति समझ कर दोनों का वस्त्र भूषण धेनु आदि से पूजन करे। हे वत्स ! इस प्रकार सपत्नीक ब्राह्मण की पूजन करने से हम ही पूजित होते हैं। इसमें कोई भी संदेह नहीं है इसलिये उनके पूजन से हम ही संपुष्ट होते हैं। मुझको प्रसन्न करने वाले अनेक प्रकार के दानचित्त करे। गोदान भूमिदान और विशेष करके सुवर्ण दान करे। वस्त्र दान शय्या दान अलंकार का दान तथा मुझको प्रसन्न करने वाला ग्रहदान करे। समस्त दानों से तीन दान विशेष कहे गये हैं। एक पृथिवी दूसरा गौ और तीसरा विद्या दान इन तीनों दानों से मुझको अतुल प्रसन्नता होती है। अतः मार्ग शीर्ष मासमें इन तीन दानों को अवश्य करना चाहिये। हे अनघ ! मैंने स्नान की विधि पहले ही कही है। इस मासमें पूजन, स्नान, और

दान करना हीं विधान कहा गया है। इसमें कुछ भी संशय नहीं। जो भक्त समस्त मार्ग शीर्ष मास व्रत करके बिता देता है और ब्राह्मणों को भक्ति से भोजन कराता है, वह समस्त पापों और व्याधियों से मुक्त हो जाता है। जो खेती में अधिक धनवान् और बहुत धान्य वाला होता है, इसमें विशेष कहने से क्या मैं तुमको अत्यन्त बात कहता हूँ। अग्नि और ब्राह्मण ये दोनों ही मेरे मुख से उत्पन्न हुये हैं परन्तु जितना ब्राह्मण का मुख श्रेष्ठ है उतना अग्नि का नहीं। हे सुत ! ब्राह्मणों के मुख में आहुति देने से कोटि गुणा अधिक फल होता है। क्योंकि जो मेरा अग्नि मुख है वह ब्रा णों के आधीन कहा गया है और ब्राह्मण सदैव स्वतन्त्र है। अतः हे सुत ! चन्द्रमा के समान उज्ज्वल चीनी और घी सहित पायस (खीर) को ब्राह्मण के मुख में आहुति देवे वह मुझे अत्यन्त प्रसन्न कर देने वाली है। यदि स्त्री पुत्रादि सुख की इच्छा है तो ब्राह्मण के मुख में

आहुति देनी चाहिए। यही मेरी प्रसन्नता है। मुझको प्रसन्न करने के लिए सुंदर लड्डू कोक रस (विशेष पाक) सूत फेनी और घृतकपूर का हवन करना चाहिए। मार्गशीर्ष मास में सुन्दर और सुगन्धि-युक्त अच्छे सफेद कमल के समान चावल और मूँग की दाल जिसमें सुगन्धित घृत खूब अधिक डाला गया हो, उसका ब्राह्मण के मुख में होम करो अर्थात् खिलाओ। हे सुत दूध, घी खारीक, चारफल, मिश्री, कपूर, नारियल (गिरी डाल कर सुन्दर पाक बनावे। और मार्गशीर्ष मास में ब्रह्मणों के लिए मन-वांछित, सुन्दर और शुद्ध व्यञ्जनों को बनावे। तथा हे सूत! सुन्दर शिखरन बनावे, और जो भोजन ब्राह्मणों को अति प्रिय हो उसको बनाकर परम श्रद्धा से ब्राह्मणों को भोजन करावे। जैसे-जैसे ब्राह्मण रस स्वाद पूर्वक भोजन करते हैं वैसे ही पृथ्वी पर मुझको अत्यंत दुर्लभ प्राप्ति होती है। अतः हे तात ऐसा करने से ब्राह्मण प्रसन्न हो वही करना चाहिये

क्योंकि ब्राह्मणों के प्रसन्न होने से ही मैं प्रसन्न होता हूं। इसमें कोई संशय नहीं है। हे चतुर्वक्त्र मेरी बातपर विश्वास करो मैंतुमसे मिथ्या नहींकहता मैंने यह बात तुम्हारें कल्याण के लिए ही कही है। यदि ब्राह्मण क्रोध करे या मारें तो भी मेरी प्रिति के लिए उनको नमस्कार ही करना चाहिये. हे पुत्र ! नित्य ऐसा करना और मार्गशीर्ष मास में विशेष करके करना चाहिए। आपने जो भोजन के लिए पूछा सो मैं उसका उत्तर तुमको देता हूं, मेरे भक्त मेरा उच्छिष्ट (प्रसाद) भोजन करना चाहिए। वह प्रसाद पापियों को भी पवित्र करने वाला और मुक्ति का फल देने वाला है जो प्रति-दिन मुझको अर्पण करके शेष प्रसाद का भोजन करता है वह एक-एक दाने में सैकड़ों चान्द्रायण व्रत के पुण्य फल को प्राप्त होता है। अवशिष्ट (जो भोग लगाने से बच रहा हो) और उच्छिष्ट (जो अर्पण किया गया हो) भक्तों के लिए यह

दो ही प्रकार का भोजन है। तीसरा प्रकार का भोजन और कोई नहीं है, यदि इनके अतिरिक्त कोई भोजन करता है तो उसको चान्द्रायण व्रत करना चाहिए जो मुझको अर्पण बिना अन्न-जल कुछ भी भोजन करता है, वह अन्न श्वान विष्टा के और जल मदिरा के समान होता है। इसलिए हे पुत्र! अन्न-जल तथा औषधि पहले मेरे अर्पण करके भक्तजनों को पश्चात् परमभक्ति से भोजन करना चाहिए। क्योंकि वह प्रसाद अपवित्र को भी पवित्र करने वाला होता है। मेरा उच्छिष्ट प्रसाद पापियों को भी तीर्थयज्ञ आदि का फल देने वाल कलि के दोषों को नाश करने वाला और सुन्दर गति को देने वाला कहा गया है। दूसरे देवताओं का नैवेद्य खाना और अभक्तों का पकवान खाना नरक में ले जाने वाला होता है। अब मैं तुमसे बोलने का जो प्रकार कहा गया है सो कहता हूं, तुम सावधान होकर मुझे तुम्हारी प्रसन्नता के लिये मैं गुप्त से गुप्त बात कहता हूं,

यह मेरी प्रतीज्ञा है जिसको सुर और असुर भी नहीं जानते। मन वचन और कर्म से जो मेरी प्रिय लक्ष्मी को भी प्राप्त कर लेता है, मार्ग शीर्ष मास में विशेष करके मेरा नाम कहना चाहिये और मुझको प्रसन्न करने वाला कृष्ण कृष्ण कहना उचित है। जो मनुष्य मुझको कृष्ण कृष्ण कह कर नित्य स्मरण करता है, मैं उसको जाल को भेदन कर कमल के समान उद्धार करता हूं, और नरक से बचाता हूँ। हे वत्स! जो विनोद (मन बहलाव) से दम्भ से मूढ़ता से लोभ से और छल से भी मेरा भजन करता है, वह भी मेरा भक्त दुःख का भागी नहीं होता। जो मनुष्य मृत्यु के समय कृष्ण नाम का पाठ करते हैं वे पापी होने पर भी यमराज को कभी नहीं देखते। जिन्होंने प्रथम (युवा) अवस्था में समस्त पापों को किया है परन्तु अंत समय में कृष्ण का नाम स्मरण करते हैं वे निस्संदेह मेरे समीप आ जाते हैं। मरण के समय

जो प्राणी विवश होकर भी जो मनुष्य नमः कृष्णाय कहते (महान कृष्ण को नमस्कार करते हैं) ऐसा कहता है। वह अवश्य विष्णु पद का भागी होता है और यमराज उसको दूर से ही स्वर्ग को जाते हुए देखते हैं। जो कृष्ण कृष्ण कहता हुआ श्मशान मार्ग में मरता है वह अवश्य मेरे पास आता है। जो मेरे भक्तों के दर्शन से कहीं भी मृत्यु हो जाती है वह बिना मेरे स्मरण के भी मुक्ति का भागी हो जाता है! हे पुत्री! प्रज्वलित पाप रूपी अग्नि का भय मत करो क्योंकि उसका श्रीकृष्ण नाम रूपी मेघ से उठे हुए जल विन्दु से शमन हो जाता है। कलिकाल रूपी सर्प के तीक्ष्ण दाढ़ का क्या भय है जोकि श्रीकृष्ण रूपी काष्ठ से उठी अग्नि से जलकर नष्ट हो जाता है। पाप रूपी अग्नि से दग्ध कर्म व्यापार से रहित मनुष्यों के लिए बिना श्रीकृष्ण स्मरण के दूसरी और कोई औषधि नहीं है। जैसे प्रयाग में गंगा, शुक्ल तीर्थ

में नर्मदा कुरुक्षेत्र में सरस्वती श्रेष्ठ है वैसे ही श्रीकृष्ण का कीर्तन श्रेष्ठ है। संसार रूपी समुद्र में निमग्न महापाप रूपी तरंग में गिरे हुए मनुष्य की बिना श्रीकृष्ण स्मरण के दूसरी और कोई गति नहीं है। मृत्यु समय के उपस्थित होने पर भी जो मनुष्य श्रीकृष्ण स्मरण की इच्छा नहीं करता है ऐसे पापी के लिये बिना श्रीकृष्ण स्मरण के और कोई दूसरा रास्ते का मार्ग नहीं है जिसके घर में नित्य ही श्रीकृष्ण नाम का कीर्तन होता है उसके घर में गया, काशी, कुरुक्षेत्र और पुस्कर सदा ही वास करते हैं। जिसकी जिह्वा निरन्तर कृष्ण कृष्ण कहती है उसी का जन्म सफल है, जिसने एक बार भी हरि इस दो अक्षर का उच्चारण किया उसने भगवान् की सामीप्य मोक्ष के गमन के लिये कमर कस ली। हरि के नाम में पापों के नाश करने की जितनी शक्ति है, उतने पाप पापी कर ही नहीं सकता। कृष्ण नाम के कीर्तन करने से मनुष्य का शरीर और मन दुखी नहीं होता

तथा पाप नहीं लगता और विकलता भी नहीं होती जो मनुष्य इस कलियुग में 'श्रीकृष्ण' इस पथ्य वचन का त्याग नहीं करता उस मनुष्य के मनमें पापरूपी रोग कलियुग में नहीं लगता श्रीकृष्ण नाम का उच्चारण करते मनुष्य को जानकर यम-राज उसके सौ जन्मों के अर्जित किये गये पापों को नाश कर देता है। जो पाप सैकड़ों चान्द्रायण और हजारों पराक व्रत करने से नष्ट नहीं होते, वे पाप कृष्ण कृष्ण ऐसा कीर्तन करने से नष्ट हो जाते हैं। दूसरे करोड़ों नामों के उच्चारण करने से मुझको कभी इतनी प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती है जितनी श्रीकृष्ण का नाम लेने से अधिकाधिक प्रीति होती है। करोड़ों सूर्य और चंद्रग्रहण को जो फल कहा जाता है, वह फल कृष्ण-कृष्ण के कीर्तन से मिल जाता है, गुरु की स्त्री के साथ गमन तथा सुवर्ण आदि की चोरी जैसे महापातक रूपी घामतापसे हिम (वर्फ)के समान नष्टहो जाते

, यदि अगम्या स्त्री के साथ गमन और सुवर्ण
की चोरी जैसे महान पापों से युक्त होने पर भी
अन्त समय में एक बार भी श्रीकृष्ण नाम का
उच्चारण हो जाय तो वह समस्त पापों से मुक्त
हो जाता है, चाहे कोई अशुद्ध (अपवित्र) मन
वाला हो वह बिना किसी प्रायश्चित के करने के
अन्त समय में कृष्ण नाम के कीर्तन से सब पापों
से मुक्त हो जाता है, और प्रेतत्व को प्राप्त नहीं
होता. जो जिह्वा कलिकाल में कृष्ण नाम का
उच्चारण नहीं करती और उनके गुन गान नहीं
करती ऐसी दुष्ट जिह्वा कटकर रसातलको चली जाय,
अथवा नष्ट हो जाय तो ही अच्छा है। हे पुत्र !
कलियुग में जो जिह्वा श्री कृष्णके गुणों का कीर्तन
करती है वह अपने या दूसरे के मुख की हो यत्न
पूर्वक वंदना करने के योग्य है। जो जिह्वा दिन
तथा रात्री में श्रीकृष्ण के गुणों का कीर्तन नहीं
करती वह उस मनुष्य के मुख में जिह्वा के रूप में

पाप वाली (पाप लता) कही जाती है। जो जिह्वा श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण भगवन्नाम का उच्चारण नहीं करती, वह रोग रूपिणी जिह्वा है, ऐसी जिह्वा गिरकर सौ टुकड़ा हो जाय। जो मनुष्य प्रातः काल उठकर श्रीकृष्ण नाम के माहात्म्य को पढ़ता है, उसके लिये मैं कल्याणों को देने वाला होता हूँ। इसमें कोई संशय नहीं। जो मनुष्य तीनों संध्याओं में अर्थात् प्रातः काल, मध्याह्न काल और सायंकाल में श्रीकृष्ण नाम के माहात्म्य को पढता है, वह अपनी समस्त कामनाओं को प्राप्त करते हुए मरने पर परम गति को प्राप्त होता है।

इति श्री स्कन्द महा पुराणे मार्गशीर्ष मास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथशर्मा कृत भाषा भगवन्नाम महिमा वर्णन पन्द्रहवां अध्याय समाप्त हुआ।१५।

## सोलहवां अध्याय

भगवान् ब्रह्माजी से कहने लगे कि हे चतुर्भुज प्रसन्न चित होकर सुनिये, अब ध्यान का वर्णन करूंगा जिस ध्यानके सुनने मात्रसे मनुष्य पृथ्वी पर सौभाग्यको प्राप्त होता है। शोभायमान उद्यान (बाग) के मध्य भाग में स्वर्ण की पृथ्वी पर देदीप्यमान रत्नों से उज्ज्वल मंडप के समीप प्रकाशमान उदित कल्प वृत्त के नीचे प्रदीप्त रत्नों की भूमि पर स्थित कमल पर विराजमान, महा नील मणि के समान नील कांति वाले, अत्यन्त बालस्वरूप गुड़ के सदृश चिक्कण और मुखारविंद तक फैले हुए सुन्दर केश वाले, सुन्दर लाल ओष्ठ वाले, भ्रमर समूह से घिरे हुए उत्फुल्ल (विकसित) कमल के समान प्रमुग्ध (अत्यंत सुन्दर) मुखवाले शोभायमान श्रेष्ठ कमल के समान नेत्र वाले चलायमान कुन्डलों से प्रकाशित तथा उत्फुल्ल ऊपर को उठे हुए कपोल वाले, सुन्दर नासिका वाले, सुन्दर मुस्कान युक्त मुख वाले, अनेक भूषणों से शोभित कंठ वाले

सुन्दर कमल के समान नख वाले, सुन्दर नेत्र वाले चलने से उड़ी हुई जो धेनुकी धूलि उससे धूसरित वक्षस्थल वाले, सुन्दर पुष्ट अंग वाले, सुवर्ण समान कांतिमान्, कटि और दोनों जंघाओं से सुन्दर शब्दायमान करधनी वाले, हंसनेवाले, दुपरिया पुष्प की कांतिके समान कमलरूपी हाथ और पैरोंकी उदार कांति से शोभायमान दक्षिण हाथ में पायस (खीर) तथा बांये हाथ में नूतन श्रेष्ठ नवनीत (मक्खन) धारण करने वाले पृथिवी के भारभूत जो देवताओं के शत्रु समूह उनकेलिये अग्नि रूप पूतना आदि के वध में प्रवृत प्रभु (समर्थ) गोपिका और गोप समूह से युक्त, इन्द्रादिक देवताओं से पूजित देवताओं के भी देव, भक्ति से नम्र होकर शेष वज्र, आदिकों के साथ प्रातः काल के समय उन श्री कृष्ण का स्मरण और पूजन कर श्वेत कमल, मक्खन दूध दही आदि के बने पदार्थों को अर्पण करके श्री कृष्ण को प्रसन्न करे।

जो मनुष्य प्रति दिन आस्तिक बुद्धि से युक्त होकर प्रातः काल में नियम से अच्युत भगवान् का पूजन करता है, वह थोड़े समय में सम्पूर्ण लक्ष्मी को इस लोक में पाता है, और मरने पर मेरे शुद्ध धाम को पाता है, हे पुत्र पहले जो मैंने लोगों के मन का हरण करने वाला, श्रीमान् दामोदर के नाम से मंत्र कहा है उसके अधिकारियों को सुनिये, हे सुत! यह मंत्र राज है इसे अयोग्य को नहीं देना चाहिये, यह शीघ्र सिद्धि देने वाला रहस्य है। इसकी रक्षा यत्न पूर्वक करनी चाहिये। आलसी, मलिन, क्लेश युक्त, दम्भी, मोह से युक्त, दरिद्र, रोगी, क्रोधी भोग की लालसा करने वाला असूया, और मत्स-रता से ग्रस्त, शठ, कटु बचन बोलने वाला, अन्याय से धन संचय करने वाला, पर स्त्री से गमन करने वाला सदैव विद्वानों का बैरी, ज्ञान से शून्य, अपने को पण्डित मानने वाला, व्रत से भ्रष्ट क्लेश से जीविका करने वाला चुगलखोर दुष्ट मनो-

वृत्ति वाला, बहुत अधिक भोजन करने वाला क्रूर कर्म करने वाला दुरात्माओं का मुखिया कृपण, पातकी भयंकर आश्रितों को भय देने वाला इस प्रकार के दुर्गुणों से युक्त मनुष्य को शिष्य न बनावे। यदि कोई ऐसा शिष्य बनाता है तो उसका दोष गुरु को भी लगता है। जैसे मंत्री का दोष राजा को, स्त्री का दोष पति को लगता है वैसे ही शिष्य का दोष गुरु को भी अवश्य लगता है। अतः गुरु शिष्य की परीक्षा किये बिना चेला न बनावे। जो शरीर मन और वचन से गुरु की सेवा में लगा रहता है जो चोरी के कर्म से रहितहै जो आस्तिक बुद्धि वाला है मोक्ष प्राप्ति के लिये उद्योग करता है ब्रह्मचर्य में नित्य रत रहता है दृढ़ व्रत (संकल्प) से युक्त है, प्रसन्न मन रहता है शुद्ध है शठता से रहित है कपट रहित है परोपकार में लगा रहता है स्वार्थी नहीं है अपने तन मन और धन से गुरु को प्रसन्न करने वाला है जो आश्रितों को प्रसन्न करने वाला और पवित्र है। इन गुणों

से युक्त शिष्य को मंत्र देना चाहिए। दूसरों को नहीं जो अयोग्य शिष्य को मंत्र देता है। उसको देवता का श्राप लगता है। अब मैं गुरुका लक्षण भी कहता हूं जो मुझ में चित रखता है शांत चित है क्रोध रहित है सब का मित्र है श्रेष्ठ और लोक व्यवहार में समदर्शी है वह गुरु कहा जाता है। जो वैष्णवों को मानता है, नित्य ही मेरी कथा में लीन रहता है और सदा मेरे उत्सव में रहता है कृपा का सागर है पूर्ण मनोरथ है समस्त जीवों का उपकार करने वाला है स्वयं सब प्रकार से निस्पृह है सिद्ध है समस्त विद्या का पण्डित है समस्त संदेहों को दूर करने वाला है, आलस्य रहित है श्रेष्ट है लोगों का मान्य है ब्राह्मण है समस्त भूत भविष्य औरवर्तमान को जानने वाला है और जो सब पर अनुग्रह करने वाला है, जो इन गुणों से युक्त है वह मनुष्यों का गुरु है। हे पुत्र मार्गशीर्ष मास में मेरे मन्दिर में ऐसे गुरु से मंत्र ग्रहण करना चाहिये तथा विद्वान् विष्णु

के व्रतोंको ग्रहण करे। मेरे प्रिय श्रीमद्भागवत् का हमेशा श्रवण करे। मुझको प्रसन्न करने वाला और लोकमें प्रसिद्ध श्रीमद्भागवत् नाम पुराणोंका श्रद्धा युक्त होकर श्रवण करे। जो मनुष्य नित्य श्रीमद्भागवत् पुराण का पाठ करता है। उसको प्रत्येक अक्षर में कपिला गोदान का फल मिलता है, और जो भगवान् का आधा श्लोक अथवा श्लोक का एक पाद नित्य पढ़ता है या सुनता है, उसको एक हजार गौ दान का फल प्राप्त होता है। हे पुत्र! जो जितेन्द्रिय होकर भगवान् के श्लोक का पाठ करता है, वह अष्टादश पुराणों के पाठ-फल का भागी होता है, जहां पर मेरी नित्य कथा होती है वहां पर वैष्णव वास करते हैं और जो सदा मेरी पूजन करते हैं वह कलियुग के दोष से दूर रहते हैं। जो मनुष्य अपने घर में वैष्णवों के शास्त्रों की पूजन करते हैं वे समस्त पापों से मुक्त होकर देवताओं से वंदना किये जाते हैं। जो अपने घर में इस कलियुग में

मद्भागवत शास्त्र का नित्य पूजन करते हैं पद
पदार्थ की व्याख्या करते हैं और कहते हैं मैं उन
पर अत्यंत प्रसन्न रहता हूँ। हे पुत्र! जितने दिनों
तक घर में भागवत् शास्त्र की चर्चा रहती है तब
तक पितर दूध घी और शहद तथा जल पान करते
हैं, जो लोग भक्ति से वैष्णव को भागवत् शास्त्र
का प्रदान करते हैं। वह कल्प कोटि सहस्र वर्ष
पर्यन्त मेरे लोक में वास करते हैं जो सदैव अपने
घर में भागवत् शास्त्र का पूजन करते हैं, वे महा
प्रलय पर्यन्त तक सब देवताओं को प्रसन्न कर
देते हैं. घर में भागवत् का आधा श्लोक, श्लोक
का एक पाद रटना श्रेष्ठ है और अन्य सैकड़ों
हजारों शास्त्रों के संग्रह से क्या प्रयोजन? अर्थात्
सब व्यर्थ है कलियुग में जिसके घर में भागवत्
शास्त्र नहीं वह यमराज के पाश बन्धन से कभी
मुक्त नहीं हो पाता। कलियुग में जिसके घर में
भागवत् शास्त्र नहीं है वह कैसे वैष्णव हो सकता
है वह तो चांडाल से भी अधिक नीच है।

हे लोकेश ! हे पुत्र ! मेरे प्रसन्नार्थ सर्वस्व देकर भी श्री भागवत् शास्त्र का संग्रह करना चाहिये। कलियुग में जहां जहां पवित्र भागवत शास्त्र होता है, वहां पर ही मैं सदैव देवताओं के साथ वास करता हूं और वहां पर नित्य समस्त तीर्थ नदी नद सरोवर यज्ञ सातपुरी और समस्त पर्वत वास करते हैं। हे लोकेश ! यश धर्म में विजय चाहने वाला धर्म बुद्धि मेरे भागवत् शास्त्र का पाप क्षय और मोक्ष के लिये श्रवण करे। श्रीमद्भागवत् पुण्य आयुः आरोग्य पुष्टि को देने वाला है इसके पढ़ने या सुनने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है जो मनुष्य श्रेष्ठ श्रीमद्भागवत को न तो सुनते हैं और न सुनकर प्रसन्न होते हैं यमराज सर्वदा उनके स्वामी हो जाते हैं। यह निश्चय सत्य है। हे पुत्र ! जो मनुष्य जिसदिन श्री मद्भागवत को सुनने नहीं जाता है विशेष करके एकादशी के दिन

नहीं जाता है। उससे बढ़कर दूसरा और कोई पातकी नहीं है। जिसके घर श्रीमद्भागवत् का एक श्लोक आधा श्लोक अथवा श्लोक का एक पाद भी हस्त लिखित रहता है।

उस घर में सदैव वास करता हूँ जैसा मनुष्य को पवित्र करने वाला श्रीमद्भागवत् है वैसा समस्त आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यास) का धारण करना और समस्त तीर्थों में स्नान करना पवित्र नहीं है। हे चतुरानन जहां-जहां श्री मद्भागवत् होता है वहां-वहां मैं बछड़े से प्रेम करने वाली गौ के समान दौड़ कर जाता हूँ। जो मेरी कथा का वाचक है तथा जो मेरी कथा के श्रवण में रत रहता है, अथवा मेरी कथा को सुनकर प्रसन्न होता है मैं उसका त्याग कभी नहीं करता। हे पुत्र ! जो श्री मद्भागवत् को देखकर खड़ा नहीं होता, उस मनुष्य का एक वर्ष का पुण्य नष्ट हो जाता है। जो श्रीमद्भागवत्को देखकर उसके सम्मानकेलिये खड़ा हो जाता है या नमस्कार करता है, उसको देखकर

मुझको अतुल प्रीति होती है। जो मनुष्य श्री मद्भा-गत् को देखकर उसके सन्मुख जाताहै, वह पद-पद में अश्वमेध यज्ञ के फल का अवश्य भागी होता है, जो मनुष्य उठकर श्रीमद्भागवत् को प्रणाम करता है उसके लिये मैं धनपुत्र स्त्री और भक्ति देता हूं, हे पुत्र ! जो अत्युत्तम उपचारों से (साम-ग्रियों से) श्रीमद्भागवत् को भक्ति से सुनते हैं, उनके मैं वशी भूत हो जाता हूं। हे सुव्रत। जो मनुष्य मेरे समस्त उत्सवों में स्वरूप भेद से भक्ति पूर्वक श्रीमद्भागवत् का श्रवण करते हैं और वस्त्र अलंकार, पुष्प धूप दीप आदि उपहारों से पूजन करते हैं वे मनुष्य मुझको अत्यंत वश में कर लेते हैं, जैसे श्रेष्ठ पति को पतिव्रता स्त्री वश में कर लेती है,

इति श्री स्कन्ध महा पुराणे मार्गशीर्षमास माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा कृत भाषा भागवत् माहात्म्य वर्णन सोलहवां अध्याय समाप्त हुआ ॥१६

## सत्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे देवेश ! किस क्षेत्र में मार्गशीर्षमास अधिक पूज्य कहा गया है, और उस क्षेत्र में क्या फल होता है, यह सब मुझसे कहिये । श्रीविष्णु भगवान् कहने लगे कि हे ब्रह्मन् ! मथुरा नाम से प्रसिद्ध मेरा श्रेष्ठ क्षेत्र है और वह रमणीक मेरी पुण्य जन्मभूमि है । हे चतुरानन ! मथुरा में पद्-पद् पर तीर्थ का फल होता है । मनुष्य जिस-जिस स्थान में स्नान करता है उस-उस स्थान से घोर पापों से मुक्त हो जाता है । हे पुत्र जो मनुष्य सब धर्मों से गिर गये हैं दुष्ट प्रकृति के हैं, उनके पापों को नाश करने वाली और नरक पीड़ा को हटाने वाली मथुरापुरी है । कृतघ्न, सुरापान करने वाला, चोर व्रत को तोड़ देने वाला ! वह मनुष्य भी मथुरापुरी मेंजाकर घोर पापों से मुक्त हो जाता है । जैसे सूर्योदय के होने पर अंधकार वज्र के भयसे पर्वत, गरूड़ को देखकर सूर्य और

वायु के वेग से मेघ नष्ट हो          तत्वज्ञान से दुःख, सिंह को देख कर हाथी नष्ट हो जाते हैं, वैसे ही मथुरा के दर्शन मात्र से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। ब्रह्म हत्या से भी युक्त मनुष्य भक्ति से युक्त होकर मथुरा के देखने से ही शुद्ध हो जाता है। फिर दूसरे पापों के संबंध में तो कहना ही क्या है अर्थात् दूसरे पापी तो अवश्य मुक्त हो ही जायेंगे स्नान के लिए मथुरा जाने वाले मनुष्य के लिए पद पद् पर पाप निराश होकर उसके शरीर से चले जाते हैं। जो अकस्मात् ही मथुरा को जाते हैं अथवा मालिक के साथ सेवा के निमित मथुरा को जाते हैं वे लोग वहां जाकर स्नान मात्र से सब प्रकार के पापों से मुक्त होकर स्वर्ग को जाते हैं। जहां पर केवल मथुरा का नाम ही उच्चारण करते हैं वहां पर सर्वदा निश्चयरूप से तुम रहा करते हो यथा सतयुग और उत्तरायण सूर्य रहाकरते हैं। हे चतुरानन जो दूसरों के मान से मंदिर का नाम ही लेने पर मेरे 'मथुरा मंदिर का नाम सुन लेता है, वह भी उसी समय सब पापों

से मुक्त हो जाता है, हे पुत्र। जो मनुष्य तीन रात्री तक उस मथुरा में निवास करते हैं उनको देखने से स्पर्श करने से तथा चरण धूलि से मनुष्य पवित्र हो जाते हैं, जिस प्रकार तृण समूह को छोटी सी आग की चिंगारी जला देती है, उसी तरह मथुरापुरी महान् पापों को भी जला देती है ।जो सर्व मंडल के समस्त तीर्थों के स्नान से फल मिलता है वही पुण्य मथुरापुरी के स्मरण मात्र करने वाले मनुष्य को मिलता है। जो चारों वेदों के पढ़ने से पुण्य मिलता है वह पुण्य मथुरापुरी के स्मर्ण करने वाले मनुष्य को होता है अन्य दूसरे स्थान का किया हुआ पाप तीथ में जाने से नष्ट हो जाता है और तीर्थों में किया गया पाप वज्र लेप हो जाता है परंतु मथुरा में ही नष्ट होता है और उस मथुरा में रहने से मनुष्य धर्म अर्थ काम और मोक्ष चारों पदार्थ प्राप्त कर लेता है। हे चतुरानन ! जो दूसरे स्थान में प्रारब्ध पाप फल दश वर्ष तक भोगनेमें आता है वह मथुरा में दश दिन में हो

भोगा जा सकता है । मथुरा के समान स्वर्ग पाताल अन्तरिक्ष और मनुष्य लोक में प्रिय स्थान और कोई नहीं है केवल मथुरा ही सर्वदा मेरा प्रिय स्थान कहा गया है । समस्त तीर्थों में मथुरा सब से अधिक श्रेष्ठ स्थान है । मैंने यहां पर गोप बालकों के साथ बाल क्रीड़ा की है । जो फल तैंतीस हजार वर्ष भारत में वास करने से मिलता है वह फल मथुरापुरी के स्मरण मात्र से ही हो जाता है। हे पुत्र राहु द्वारा सूर्य नारायण के ग्रसे जाने पर सूर्य ग्रहण में जो पुण्य होता है उससे भी अधिक पुण्य मथुरा में प्रतिदिन होता है । तीर्थराज प्रयाग में एक हजार वर्ष वास करने में जो फल मिलता है हे पुत्र वह फल मार्गशीर्ष मास में मधुपुरी (मथुरा में) वास करने से प्राप्त होता है । वाराणसी(काशी) में एक हजार वर्ष वास करने से जो फल होता है वह फल मथुरा में मार्गशीर्ष मास के एकदिन. में होता है। जो मनुष्य छः मास तक गोदावरी और द्वारिका में वास करता है तथा कुरुक्षेत्र में

पृथ्वी दान करता है और छः मास तक गया में वास करता है वह मथुरा में एकदिन वास के समान भी नहीं। जिसके समान द्वारिका काशी कांची माया पूरी गदाधर आदि और कोई तीर्थ नहीं है। पितर लोग मथूरा में यमुना जल से तृप्त होकर पिंड दान की इच्छा नहीं करते। जो मनुष्य मथुरा को साधारण दृष्टि से देखते हैं उनको पाप राशियों से युक्त जानना चाहिये जिसने मथुरा को नहीं देखा किंतु देखने की इच्छा मात्र रहती है उसके और कहीं मरने पर भी मथुरा ही में जन्म होता है। हे चतुरानन! पृथ्वी के कण (धूलिकण) समय पाकर गिने जा सकते हैं, परंतु मथुरा के जितने तीर्थ हैं उनकी गणना नहीं हो सकती। भो ब्रह्मदेव! भो ब्रह्मदेव! मथुरा पुरी में वास करो वास करो मैं उस मथुरा पुरी में गोप कन्याओं के साथ निरन्तर वास करता हूं रे रे संसार में मग्न मनुष्यो और अन्य मेरे शिष्य वर्ग सुनो, यदि अत्यंत सुख की इच्छा है तो मेरी

मथुरा पुरी में वास करो, अहो(आश्चर्य है)! कि संसार के प्राणी नेत्र युक्त होकर भी अंधे हो रहे हैं और कुछ देखते नहीं हैं। मथुरा पुरी के रहने पर भी सदा संसार में इस जन्म-परम्परा को भोगते रहते हैं। जिसने भाग्य योग से अतुल मनुष्य योनि पाकर मथुरा को नहीं देखा उसकी सारी आयुः व्यर्थ ही गई। इस बुद्धि की दुर्बलता के प्रति महान् आश्चर्य होता है, और ऐसे भाग्य की हीनता पर आश्चर्य है तथा इस प्रकार के मोह महिमा पर आश्चर्य है जिनके कारण मथुरा का सेवन नहीं किया गया। जो मथुरा को त्याग करके अन्यत्र वास की इच्छा करता है वह मूढ़ मेरी माया से मोहित होकर संसार में भ्रमण करता है। जो मनुष्य मथुरा पुरी में जाकर उसको त्याग कर अन्यत्र जाने की इच्छा करता है उस दुर्बुद्धि को कोई ज्ञान नहीं है वह अज्ञान से घिरा हुआ है। जो माता-पिता और अपने भाई-बन्धुओं से त्याग कर दिये गये हैं तथा जिनका कहीं ठिकाना

नहीं है उनके लिये मेरी मथुरा पुरी ही गति को देने वाली है । जो पाप समूह से घिरे हुए हैं, और दरिद्रता के कारण गिर गये हैं तथा जिनकी कहीं भी गति नहीं है उनके लिये मथुरा पुरी ही गति देने वाली है सार से भी अत्यन्त सार और गुप्त से भी परम गुप्त गति स्थान को ढूंढने वाले मनुष्यों के लिये मथुरा ही परम गति दाता स्थान है। मथुरा पुरी श्रेष्ठ पुण्यों से श्रेष्ठ दानों से, तप से, स्तुति करने तथा नाना प्रकार के उपायों से नहीं मिलती किंतु मेरी कृपा मात्र से मिलती है । जिन मनुष्यों की मुझमें स्थिर भक्ति है, उन पर मेरी अत्यंत कृपा रहती है और उन धन्य मनुष्यों की मथुरा में गति होती है । जो गति योगी ब्रह्मवेत्ता और बुद्धिमान की होती है वही गति मथुरा में प्राण त्यागने वाले मनुष्य की होती है। यद्यपि संसार में आज काशी,

काची आदि मुक्ति प्रदान करने वाली पुरी हैं। परन्तु उनमें एक मथुरा ही धन्य है जो कि मथुरा में जन्म ग्रहण से मौंजी व्रत (यज्ञोपवीत संस्कार होने के पश्चात् ब्रह्मचर्य पालन) से मुक्ति (संसार के सुख भोग) से और दान से मनुष्यों को चार प्रकार की मुक्ति होती है। दूसरी जगह जो गति सैकड़ों मन्वन्तर पर्यन्त योगाभ्यास करने से नहीं मिलती। वह गति इस मथुरा में मेरी कृपा से खेल कूद ही में मिल जाती है। जिस मथुरा में पाप से भय नहीं है और यमराज से भय नहीं है तथा गर्भ वास का भी भय नहीं है। उस मथुरा क्षेत्र का आश्रय कौन मनुष्य नहीं करेगा। हे ब्रह्मन्! मथुरा में जो पुण्य होता है उस पुण्य का फल सुनो। जो मथुरा में वास करके मथुरा ही में मर जाते हैं, वे कीड़े, पतंगा आदि भी जन्मांतर में चतुर्भुज (विष्णु

रूप ) हो जाते हैं और जो वृक्ष तट भाग से गिर जाते हैं। वह वृक्ष भी परम गति को प्राप्त हो जाते हैं। जो गूंगा जड़ ( मूर्ख ) अन्धा और वधिर ( वहिरा ) हैं तथा तप नियम से रहित हैं। और जो काल से मरे हैं वह भी मेरे लोक को जाते हैं और सर्प के डसने से पशु के प्रहार से अग्नि में जलने से, जल में डूबने से तथा और किसी प्रकार से किसी को अकाल मृत्यु हो जाय तो वे लोग भी अवश्य मेरे लोक में जाते हैं। हे मुनि श्रेष्ठ ! मैं शपथ पूर्वक कहता हूं और यह बात सत्य है मथुरा के समान दूसरा स्थान कहीं पर भी ऐसा समस्त अभिप्सित फल को देने वाला नहीं है। जो मथुरा कामनाओं की इच्छा करने वालों को धर्म, अर्थ, काम को देने वाली है, और मुक्ति चाहने वालों के लिये मुक्ति देती है। जो भक्ति के चाहने वाले हैं उनको भक्ति

देती है। ऐसी मथुरा पुरी का कौन बुद्धिमान् आसरा नहीं करेगा। मार्ग शीर्ष मास में ऐसी मथुरा का सेवन करना चाहिये और उसके अभाव में विधि पूर्वक पुष्कर तीर्थ का सेवन करना चाहिए पुष्कर तीर्थ में ब्रह्मकुण्ड नाम से प्रसिद्ध ब्रह्मा का श्रेष्ठ कुण्ड है और विष्णुकुण्ड नाम से प्रसिद्ध विष्णु का मध्यम कुण्ड है, तथा रुद्र देवत्य नाम से प्रसिद्ध शिव का कनिष्ठ कुण्ड है। हे बुद्धिमान् इन कुण्डों में विधि पूर्वक स्नान, दान और श्राद्धादि करना चाहिए और मेरी प्रसन्नता के निमित्त मेरा पूजन विधान पूर्वक करना चाहिए। हे पुत्र! मार्ग शीर्ष मास की पूर्णमासी मुझको अति प्रिय है। उस पूर्णमासी को जो कुछ पुण्य किया जाता है वह मुझको अति प्रिय है उस पूर्णमासी को जो कुछ पुण्य किया जाता है वह मुझको अति प्रीतिकर है। हे पुत्र! पूर्णमासी

के दिन जो पुण्य किया जाता है, गोदान, अन्न, दान, सुवर्ण दान, पृथ्वी का दान और गृहदान जो कुछ भी किया जाता है उसका पूर्ण फल प्राप्त होता हैं और अक्षय होता है। अपनी सामर्थ्य के अनुसार ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये और व्रत की पूर्ति के लिये पूर्णिमा में ही उत्सव मनाना चाहिये। हे पुत्र! मार्ग शीर्ष मास में मुझको जैसी मथुरा प्रिय है वैसा तीर्थराज (प्रयाग) आदि भी प्रिय नहीं हैं तथा अभाव में पुष्कर भी वैसा प्रिय नहीं अतः बुद्धिमानों को चाहिये कि मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा पुष्कर तीर्थ और मथुरा स्नान दानादि कर व्यतीत करें, अथवा जिस किसी स्थान में भी हो विधि पूर्वक पूर्णिमा को स्नान दान और उत्सव आदि के द्वारा ही व्यतीत करे जो मार्गशीर्ष की पूर्णिमासी को स्नान

दान पूजा उत्सवादि नहीं करता वह साठ हज़ार वर्षों तक रौरवादि नरकों की यातना भोगता है। इसलिये विद्वान् लोग सब प्रकार से पूर्णिमा का मान करें। यदि पूर्णमासी मार्गशीर्ष मास की हो तो अत्यंत और अनन्त फल देने वाली होती है। हे वत्स! जिस प्रकार मैंने मार्गशीर्ष को अपना प्रिय व्रत माना है उस मार्गशीर्ष मास में जो भक्ति से स्नान दान व्रत और उत्सवादि करता है उसका जो पुण्य फल होता है वह भी सुनो! दश हज़ार तीर्थों में स्नान दानादि करने से जो पुण्य होता है और कोटियों व्रत करने से जो पुण्य होता है तथा समस्त यज्ञों के करने से जो पुण्य होता है वही पुण्य इस मार्गशीष मास में होता है। पुत्रहीन मनुष्य पुत्र को पाता है निर्धन को धन प्राप्त होता है, विद्यार्थी विद्या को और रूप की इच्छा करने वाला रूप को

पाता है। ब्राह्मण ब्रह्मतेज वाला होता है क्षत्री विजय प्राप्त करता है वैश्य को धन का लाभ होता है और शुद्र पातक से मुक्त हो जाता है। हे मानव ! जो तीनों लोकों में दुर्लभ और दुष्प्राप्य (कठिनता से मिलने वाली) वस्तु है उन सबको मार्गशीर्ष मास के सेवन से मनुष्य प्राप्त कर सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है। हे सुत ! यद्यपि जो इन कामनाओं में आसक्त मनुष्य हैं वे अन्त में तृप्त हो जाते हैं और उन्हें पुनः कामनाओं की इच्छा नहीं होती। हे पुत्र ! मुझे वश करने वाली सुन्दर श्रेष्ठ भक्ति अत्यन्त दुर्लभ होती है। वह भक्ति मार्ग शीर्ष मास के सेवन करने से मिल जाती है। हे चतुर्मुख। मार्गशीर्ष मास मुझको अत्यंत प्रीति कर है और सर्वदा मेरा प्रिय

है। इसलिये इस मास के सेवन से मेरी कृपा से वह समस्त वस्तु को पाता है।

इति श्री स्कन्द महा पुराणे मार्गशीर्ष मास
माहात्म्य ज्योतिषाचार्य पं० जगन्नाथशर्मा
कृत भाषा भगवन्नाम महिमा वर्णन
सत्रहवां अध्याय समाप्त हुआ।१७।

इति मार्गशीर्ष माहात्म्य (भाषा)
समाप्तम्

मुद्रक—कुमार फाईन आर्ट प्रेस, चाह रहट दिल्ली।

## शिव स्तुति तथा पूजा

२२-९-६३-२२००

सम्पादक—रामकृष्णदास 'रसिक'

इस पुस्तक में शिव-भक्ति-पूर्ण सरस व सरल पदों, भजनों, कविताओं, आरतियों और स्तोत्रों का अपूर्व संग्रह किया गया है। साथ ही श्रीशिवपूजन विधि, श्रीशिव पञ्चाक्षर-मन्त्र जप विधि, महामृत्युञ्जय जप विधि, पार्थिव-शिव-पूजन विधि आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। शिव-भक्तों के लिए अद्वितीय संकलन है मूल्य ३।।) प

## दुर्गा सप्तशती भाषा

संस्कृत भाषा में दुर्गा सप्तशती भगवती दुर्गा की उपासन प्रमुख ग्रन्थ है। किन्तु संस्कृत न जानने वालों के लिए उ करना और समझना कठिन है। इसी लिए इस पुस्तक मे हिन्दी भाषा में अनुवाद कराकर प्रकाशित किया गया है। सप्तशती के साथ उसके सभी अङ्ग—कवच, अर्गला, कीलक, तो तथा और भी नित्य पढ़ने योग्य स्तुतियाँ और आरतियाँ दी मूल्य २।) पोस्टेज १।।)

## दुर्गा स्तुति तथा पूजा

भगवती दुर्गा साधक को मनवांछित फल देने वाली है, इसके लिए आवश्यकता है उनमें अटूट श्रद्धा और भक्ति की। प्रस्तुत पुस्तक में माता दुर्गा के चरित्रों से सम्बन्धित पदों, भजनों, भेंटों और स्तोत्रों का संग्रह किया गया है जिनके गाने और सुनने से भक्तगण भाव-विभोर हो उठते हैं। मूल्य ३।।) पोस्टेज १।।)

## बारह महीने के त्योहार

भारतीय जनता के लिए प्रत्येक तिथि और दिन किसी न किसी पुण्यमयी घटना की स्मृति दिलाने वाला है। ये स्मृति दिवस ही कालान्तर में पर्वों और त्योहारों का रूप धारण कर लेते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में वर्ष भर के सभी प्रमुख त्योहारों का वर्णन किया गया है और अन्त में आर्य समाज के १४ पर्वों पर भी प्रकाश डाला गया है। मूल्य ३।।) पोस्टेज १।।)

# देहाती पुस्तक भण्डार

चावड़ी बाजार, दिल्ली-६      फोन २२००३०